CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/3/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।

(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।

(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तम्भ हैं – प्रथम - सुसंस्कार और द्वितीय - सत्संगति। सुसंस्कार जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करते हैं। परिणामत: सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – "महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो।"

वस्तुत: चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है। चरित्रवान व्यक्ति ही समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुर जी की उक्ति अक्षरश: सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते; वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है। आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के आचरक घटक हैं – इस बात को विस्मृत कर देते हैं। [10 अंक]

1(i). "सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है।" पंक्ति में रेखांकित पद का आशय हो सकता है : [1 अंक]

(A) विलक्षण विचार

(B) विलक्षण वैभव

(C) विलक्षण भाव

(D) विलक्षण विवेक

सही उत्तर: (B) विलक्षण वैभव

हल:

अवधारणा:

- विभूति का अर्थ वैभव, संपदा अथवा विशिष्ट उपलब्धि होता है। दुर्लभ विशेषण बताता है कि यह संपदा सहज उपलब्ध नहीं होती।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण गद्यांश सत्संगति को जीवन की मूल्यवान उपलब्धि मानता है। इसलिए दुर्लभ विभूति का आशय विलक्षण वैभव है। यहाँ वैभव का अर्थ केवल धन नहीं, जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाली अमूल्य संपदा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) का विचार, (C) का भाव और (D) का विवेक सत्संगति के संभावित परिणाम हो सकते हैं, लेकिन इनमें से कोई विभूति का सीधा अर्थ नहीं देता। इसलिए रेखांकित पूरे पद का अर्थ बताने वाला विकल्प (B) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अत: सही उत्तर (B) विलक्षण वैभव है।

त्वरित सुझाव: शब्द का अर्थ चुनते समय विशेषण और संज्ञा, दोनों का अर्थ मिलाकर विकल्प जाँचें।

1(ii). सुचारित्र्य के सशक्त स्तम्भ हैं : [1 अंक]

(A) संपत्ति और सुसंस्कार

(B) सत्संगति और आनुवंशिकता

(C) सुसंस्कार और परिवेश

(D) सुसंस्कार और सत्संगति

सही उत्तर: (D) सुसंस्कार और सत्संगति

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में स्पष्ट रूप से कही गई बात का उत्तर उसी वाक्य से लिया जाता है। अपनी ओर से अन्य कारण जोड़ना उचित नहीं है।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण प्रारंभिक वाक्य में लेखक ने कहा है कि सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तम्भ हैं; प्रथम सुसंस्कार और द्वितीय सत्संगति। अतः प्रश्न के दोनों अपेक्षित आधार इसी वाक्य में मिल जाते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में संपत्ति, (B) में आनुवंशिकता तथा (C) में परिवेश जोड़ा गया है। ये प्रारंभिक वाक्य में बताए गए दोनों स्तम्भों का सही जोड़ा नहीं बनाते। केवल (D) में सुसंस्कार और सत्संगति एक साथ दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) सुसंस्कार और सत्संगति है।

त्वरित सुझाव: दो आधार पूछे जाने पर ऐसा विकल्प चुनें जिसमें पाठ में बताए गए दोनों शब्द साथ हों।

1(iii). संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'कालुष्य' शब्द का सटीक अर्थ क्या हो सकता है ? [1 अंक]

(A) दोष

(B) कालिमा

(C) लघुता

(D) प्रभास

सही उत्तर: (A) दोष

हल:

अवधारणा:

- एक ही शब्द का भौतिक और नैतिक संदर्भ में अलग अर्थ हो सकता है। कुमार्गी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ उसके आचरण से जोड़कर समझना चाहिए।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण लेखक धातु की कालिख और कुमार्गी के कालुष्य की तुलना करता है। धातु में कालिख भौतिक है, जबकि कुमार्गी में कालुष्य उसके चरित्र की बुराई अथवा दोष का संकेत है। सत्संगति उसी नैतिक दोष को दूर करती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इसलिए (A) प्रसंग के अनुकूल है। (B) कालिमा धातु की कालिख का निकट अर्थ है, पर व्यक्ति के आचरण में आशय दोष है। (C) लघुता का अर्थ छोटापन और (D) प्रभास का अर्थ प्रकाश है; दोनों यहाँ अनुपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) दोष है।

त्वरित सुझाव: अर्थ निर्धारित करते समय देखें कि शब्द धातु के लिए है या कुमार्गी व्यक्ति के चरित्र के लिए।

1(iv). गद्यांश के अनुसार सतत सत्संगति से क्या प्राप्त होता है ? [1 अंक]

(A) निर्माण को नई दिशा

(B) भ्रमण करने का मार्ग

(C) विचारों को नई दिशा

(D) विचरण करने का मार्ग

सही उत्तर: (C) विचारों को नई दिशा

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में प्रयुक्त सतत सत्संगति पद को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाने पर उसका प्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट होता है।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण गद्यांश का निर्णायक कथन है कि सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है। आगे इन्हीं अच्छे विचारों से अच्छे कर्मों की प्रेरणा और सुचरित्र का निर्माण होने की बात कही गई है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण अतः तात्कालिक परिणाम विचारों को नई दिशा है। (A) में निर्माण को नई दिशा कहा गया है, जो मूल वाक्य नहीं है। (B) भ्रमण और (D) विचरण का संबंध घूमने से है; गद्यांश इनकी चर्चा नहीं करता। विकल्प (C) कथन से सीधे मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) विचारों को नई दिशा है।

त्वरित सुझाव: प्रभावों की शृंखला में प्रश्न जिस पद का सीधा परिणाम पूछे, उसी संबंधित वाक्य को चुनें।

1(ix). आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन के माध्यम से लेखक ने उल्लेख किया है : [1 अंक]

(A) सत्संगति के प्रभाव को

(B) हजारी प्रसाद की उदारता को

(C) महाकवि टैगोर की दिव्यता को

(D) चरित्र निर्माण के प्रयासों को

सही उत्तर: (A) सत्संगति के प्रभाव को

हल:

अवधारणा:

- लेखक द्वारा उद्धृत किसी कथन का प्रयोजन उसके पहले और बाद की चर्चा से समझना चाहिए। कथन का विषय और उसे देने का उद्देश्य अलग हो सकते हैं।
- यहाँ मुख्य चर्चा सत्संगति से विचारों और चरित्र में होने वाले सकारात्मक परिवर्तन की है।

चरण 1: कथन को प्रसंग से जोड़ना आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि टैगोर के पास बैठने मात्र से भीतर का देवता जागने जैसा लगता था। लेखक इससे समझाता है कि श्रेष्ठ व्यक्ति की संगति हमारे भीतर के अच्छे गुणों को जाग्रत करती है। अतः उदाहरण सत्संगति के प्रभाव का प्रमाण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) में द्विवेदी जी की उदारता कही गई है, जिसका इस कथन में उल्लेख नहीं है। (C) टैगोर की दिव्यता तक सीमित है, जबकि लेखक उनसे मिलने वाले व्यक्ति पर संगति के प्रभाव को रेखांकित करता है। (D) में व्यक्तिगत प्रयासों की बात है, पर उदाहरण में बैठने मात्र से हुई अनुभूति बताई गई है। इसलिए (A) सबसे सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) सत्संगति के प्रभाव को है।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का उद्देश्य पूछे जाने पर उसके ठीक पहले समझाए गए मुख्य विचार को पहचानें।

1(v). गद्यांश में 'भीतर का देवता' कथन किस बात की ओर संकेत करता है ? [1 अंक]

(A) ईश्वर का आभास

(B) दिव्यगुणों का आभास

(C) सत्य का आभास

(D) परिवेश का आभास

सही उत्तर: (B) दिव्यगुणों का आभास

हल:

अवधारणा:

- भीतर का देवता जागने का कथन मनुष्य के अंतर्मन में विद्यमान श्रेष्ठ गुणों के जागरण का रूपक है। इसका आशय प्रसंग से निर्धारित होगा।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार टैगोर के पास बैठकर भीतर का देवता जागने जैसा लगता था। यह उदाहरण सत्संगति के प्रभाव को स्पष्ट करता है; श्रेष्ठ व्यक्ति की संगति से अपने भीतर के उदात्त और दिव्य गुण अनुभव होने लगते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इसलिए (B) उपयुक्त है। (A) ईश्वर का आभास कथन को धार्मिक अनुभूति तक सीमित कर देता है। (C) सत्य का आभास केवल एक गुण को बताता है और (D) परिवेश का आभास बाहरी वातावरण से संबंधित है। यहाँ संकेत आंतरिक श्रेष्ठता के जागरण का है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) दिव्यगुणों का आभास है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ निकालते समय उसके पहले आए विचार से संबंध जोड़ें; यहाँ केंद्रीय विचार सत्संगति है।

1(vi). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : शिथिल चरित्र से ही जीवन सार्थक है।

कथन II : शिथिल चरित्र से ही राष्ट्र निर्माण संभव है।

कथन III : आनुवंशिक परंपरा से ही चरित्र अर्जन संभव है।

कथन IV : उदात्त चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है।

गद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन I सही है।

(B) केवल कथन II और III सही हैं।

(C) केवल कथन IV सही है।

(D) केवल कथन II सही है।

सही उत्तर: (C) केवल कथन IV सही है।

हल:

अवधारणा:

- हर कथन को गद्यांश से स्वतंत्र रूप से जाँचें। शिथिल चरित्र और उदात्त चरित्र के अंतर तथा आनुवंशिक प्रेरणा और व्यक्तिगत अर्जन के भेद को ध्यान में रखें।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण कथन I गलत है, क्योंकि गद्यांश सुचरित्र को जीवन की सार्थकता का आधार बताता है। कथन II

भी गलत है; शिथिल चरित्र राष्ट्र निर्माण के बजाय राष्ट्र में चरित्र संकट उत्पन्न करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण कथन III गलत है, क्योंकि परंपरा केवल बीज या प्रेरणा दे सकती है; चरित्र का अर्जन व्यक्ति स्वयं करता है। कथन IV सही है, क्योंकि उदात्त चरित्र से जीवन सार्थक होता है। अतः (A), (B) और (D) में गलत कथन चुने गए हैं; (C) अकेला सही समूह देता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) केवल कथन IV सही है है।

त्वरित सुझाव: केवल शब्द वाले कथनों को विशेष सावधानी से जाँचें; प्रेरणा मिलने को चरित्र का अर्जन न समझें।

1(vii). 'कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है।' इस उदाहरण के मूल भाव को व्यक्त करने वाली कहावत है : [1 अंक]

(A) परहित सरिस धर्म नहीं भाई

(B) बिनु सत्संग विवेक न होई

(C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई

(D) जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना

सही उत्तर: (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई

हल:

अवधारणा:

- उपमा के मूल भाव से मेल खाने वाली कहावत वही होगी जिसमें बुरी स्थिति का अच्छी संगति से सुधार बताया गया हो। केवल विषय का एक शब्द मिलना पर्याप्त नहीं है।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण जैसे पारस के स्पर्श से कुधातु बदल जाती है, वैसे ही सत्संगति से कुमार्गी व्यक्ति का दोष दूर होता है। उदाहरण का मुख्य केंद्र दुर्जन का सुधरना है। सठ सुधरहिं सतसंगति पाई इसी परिवर्तन को सीधे व्यक्त करती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) परहित के धर्म की बात करती है। (B) सत्संग से विवेक मिलने की बात कहती है, पर दुर्जन के सुधार को सीधे नहीं बताती। (D) सुमति से संपत्ति मिलने का भाव देती है। इसलिए उदाहरण के पूरे आशय से सबसे सटीक मेल (C) का है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई है।

त्वरित सुझाव: कहावत चुनते समय उदाहरण का मुख्य परिवर्तन पहचानें: यहाँ बुरे व्यक्ति का सत्संगति से सुधरना है।

1(viii). विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में क्या सत्य नहीं है ? [1 अंक]

(A) सुचरित्र के बीज परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं।

(B) चरित्र निर्माण व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों पर निर्भर है।

(C) परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकती है।

(D) चरित्र निर्माण संगति से होता है।

सही उत्तर: (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न पूरी चर्चा नहीं, विदुर जी की विशिष्ट उक्ति के संदर्भ में असमर्थित बात पूछता है। नहीं शब्द के कारण उन विकल्पों को हटाना है जो उक्ति में स्पष्ट हैं।
- उत्तर चुनने के लिए गद्यांश का प्रमाण और सभी दिए गए विकल्पों का अर्थ परस्पर मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित कथन का विश्लेषण विदुर जी की उक्ति के अनुसार सुचरित्र के बीज वंश परंपरा से मिल सकते हैं, पर चरित्र निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। परिस्थिति केवल प्रेरणा देती है। इसलिए (A), (B) और (C) उस उक्ति का सही आशय व्यक्त करते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (D) चरित्र निर्माण को संगति से जोड़ता है। व्यापक गद्यांश में सत्संगति का महत्त्व बताया गया है, किंतु विदुर जी की निर्दिष्ट उक्ति व्यक्तिगत प्रयास को निर्णायक मानती है। अतः इस विशेष उक्ति के संदर्भ में असमर्थित कथन (D) है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है है।

त्वरित सुझाव: नहीं वाले प्रश्न में पूरे गद्यांश की सामान्य बात और निर्दिष्ट व्यक्ति की उक्ति का आशय अलग जाँचें।

1(x). शिथिल चरित्र सम्पूर्ण राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है ? [1 अंक]

(A) राष्ट्र शिथिल हो जाता है

(B) राष्ट्र का विकास रुक जाता है

(C) राष्ट्र का उत्थान करता है

(D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

सही उत्तर: (D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान गद्यांश का स्पष्ट कथन है कि व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है। व्यक्ति राष्ट्र का एक घटक है; इसलिए उसका आचरण केवल निजी विषय नहीं रह जाता।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच व्यक्तियों से परिवार, परिवारों से कुल तथा विभिन्न समाजों से राष्ट्र बनता है। इस क्रम में व्यक्ति की चारित्रिक दुर्बलता सामूहिक जीवन को प्रभावित करती है। विकल्प (A) सामान्य और अस्पष्ट है। विकल्प (B) में विकास रुकने की बात है, जो प्रश्न का प्रत्यक्ष उत्तर नहीं है। विकल्प (C) विपरीत अर्थ देता है, क्योंकि शिथिल चरित्र राष्ट्र का उत्थान नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है: राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में आए कारण का गद्यांश में उल्लेख खोजकर उसके तुरंत बाद दिया प्रभाव चुनें।

2. मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले ?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले ?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने ?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली-सी याद बने ?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे ?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे ?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने –
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने ! [5 अंक]

2(i). मैं कब कहता हूँ – पंक्ति में 'कब' क्या इंगित करता है ? [1 अंक]

(A) सदैव निराकांक्षी
(B) सदैव आकांक्षी
(C) सदैव अभिलाषी
(D) सदैव अस्थिर

सही उत्तर: (A) सदैव निराकांक्षी

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान कवि बार-बार कहता है कि वह संसार को अपने अनुकूल बनाने, कठिनाइयाँ मिटाने या विजय का वैभव पाने की माँग नहीं करता। यहाँ कब का प्रयोग वास्तविक समय पूछने के लिए नहीं, ऐसी इच्छा से इनकार करने के लिए हुआ है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच इसलिए निराकांक्षी का अर्थ यहाँ निजी सुविधा, प्रतिफल और प्रतिष्ठा की आकांक्षा से मुक्त होना है; कवि कर्महीन नहीं है। विकल्प (B) आकांक्षी और (C) अभिलाषी निजी कामनाओं पर बल देते हैं, जबकि कवि उन्हें नकारता है। विकल्प (D) अस्थिर मानसिक चंचलता बताता है; कविता में दृढ़ता और संघर्ष की तत्परता दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: सदैव निराकांक्षी।

त्वरित सुझाव: दोहराए गए प्रश्नवाचक कथन को सामान्य कथन में बदलें: मैं ऐसी माँग कभी नहीं करता।

2(ii). संसार के विषय में कवि का क्या विचार है ? [1 अंक]

(A) संसार उसकी गति से चले

(B) संसार तीव्र गति से चले

(C) संसार धीमी गति से चले

(D) संसार अपनी गति से चले

सही उत्तर: (D) संसार अपनी गति से चले

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान आरंभिक पंक्ति में कवि कहता है कि वह जग को अपनी दुर्धर गति के अनुकूल बनने के लिए नहीं कहता। इससे स्पष्ट है कि वह संसार की स्वतंत्र गति और उसकी वास्तविक परिस्थितियों को स्वीकार करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कवि स्वयं कठिनाइयों का सामना करने को तैयार है; वह बाहरी जगत को अपनी सुविधा के अनुसार बदलना नहीं चाहता। विकल्प (A) संसार को उसकी गति से चलाने की माँग करता है, जिसे कवि नकारता है। विकल्प (B) तीव्र तथा (C) धीमी गति का आग्रह करते हैं; कविता में इन दोनों में से किसी विशेष गति की अपेक्षा नहीं की गई है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है: संसार अपनी गति से चले।

त्वरित सुझाव: संसार के बारे में कवि की दृष्टि तय करते समय कविता की पहली पंक्ति का निषेध ध्यान में रखें।

2(iii). "वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने" से कवि का तात्पर्य है : [1 अंक]

(A) जीवन से विपत्तियों का समाप्त हो जाना

(B) काँटों का फूलों की शरण में चले जाना

(C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना

(D) काँटे का कोमल फूल के रूप में बदल जाना

सही उत्तर: (C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान कवि काँटे की कठोरता और तीखेपन को उसकी मर्यादा कहता है। इस प्रसंग में काँटा जीवन की कठिनाइयों का तथा फूल कोमल और सुखद परिस्थितियों का प्रतीक है। इसलिए पंक्ति का आशय प्रतिकूल दशाओं का अनुकूल दशाओं में बदलना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच पूरी पंक्ति में कवि ऐसी सुविधा की माँग से इनकार करता है। विकल्प (A) विपत्तियों के पूरी तरह समाप्त होने की बात करता है, जबकि यहाँ उनके सुखद रूप में ढलने का बिंब है। विकल्प (B) में फूलों की शरण में जाना असंगत है। विकल्प (D) काँटे और फूल का केवल शाब्दिक परिवर्तन बताता है; प्रश्न के तात्पर्य के लिए प्रतीकात्मक अर्थ अधिक उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना।

त्वरित सुझाव: तात्पर्य पूछे जाने पर काँटे और फूल के शाब्दिक रूप के स्थान पर उनके जीवन-संबंधी प्रतीक पहचानें।

2(iv). कवि के अनुसार जीवन की सार्थकता क्या है ? [1 अंक]

(A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में

(B) सुख एवं सुविधाजनक स्थिति में

(C) परस्पर ईर्ष्या-द्वेष में

(D) शक्ति प्रदर्शन एवं नेतृत्व में

सही उत्तर: (A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान कवि युद्ध में तीखी चोट मिलने की संभावना स्वीकार करता है। वह न सदा प्रशस्त पथ चाहता है, न विजय के बदले ऊँचा प्रासाद। इन कथनों से जीवन के प्रति उसकी संघर्षशील और निर्भीक दृष्टि प्रकट होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच अंतिम पंक्तियों में अपनी मिट्टी के कण-कण के भी गति-रोधक शूल बन जाने पर तैयार रहना कठिनाइयों का सामना करने की चरम तत्परता है। विकल्प (B) की सुख-सुविधा को कवि लक्ष्य नहीं बनाता। विकल्प (C) के ईर्ष्या-द्वेष का समर्थन नहीं है। विकल्प (D) का शक्ति-प्रदर्शन और नेतृत्व बचाए रखने का मोह भी कविता की भावना के विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में।

त्वरित सुझाव: कविता के केंद्रीय संदेश के लिए देखें कि कवि किन सुविधाओं को नकारता और किन कठिनाइयों को स्वीकारता है।

2(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	जीवन-मरु	(i)	सुखद परिस्थितियाँ
2.	नंदन-कानन	(ii)	विपरीत परिस्थितियाँ
3.	गति-रोधक	(iii)	उत्तरोत्तर उन्नति में बाधक

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

(C) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

सही उत्तर: (B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान जीवन-मरु में मरु अर्थात मरुस्थल की कठिनता निहित है; अतः वह विपरीत परिस्थितियों का संकेत है और उसका मेल (ii) से होगा। नंदन-कानन सुखद उद्यान का बिंब है, इसलिए वह सुखद परिस्थितियों अर्थात (i) से जुड़ता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच गति-रोधक वह है जो आगे बढ़ने की गति रोकता है; यहाँ उसका अर्थ उत्तरोत्तर उन्नति में बाधक, अर्थात

(iii), है। विकल्प (A) पहले दो अर्थ उलट देता है। विकल्प (C) जीवन-मरु को उन्नति का बाधक और गति-रोधक को सुखद परिस्थिति बताकर मेल बिगाड़ता है। विकल्प (D) में भी पहला और तीसरा मेल गलत हैं। केवल विकल्प (B) तीनों अर्थ सही रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)।

त्वरित सुझाव: पहले मरु और कानन के विपरीत अर्थ मिलाएँ, फिर गति-रोधक का सीधा अर्थ लेकर विकल्प जाँचें।

3(i). समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशन हेतु स्वीकार करने की निश्चित समय-सीमा को कहा जाता है : [1 अंक]

(A) ऑन लाइन

(B) ऑफ लाइन

(C) डेड लाइन

(D) डेथ लाइन

सही उत्तर: (C) डेड लाइन

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान समाचार माध्यम में प्रकाशन या प्रसारण की तैयारी के लिए सामग्री स्वीकार करने का एक अंतिम निर्धारित समय होता है। इस सीमा तक प्राप्त समाचार को संबंधित संस्करण में शामिल करने की प्रक्रिया की जा सकती है। इस अंतिम समय को डेड लाइन कहते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच प्रश्न का निर्णायक संकेत निश्चित समय-सीमा है। विकल्प (A) ऑन लाइन नेटवर्क से जुड़े रहने या इंटरनेट पर उपलब्ध होने की स्थिति बताता है। विकल्प (B) ऑफ लाइन नेटवर्क से अलग स्थिति को सूचित करता है। विकल्प (D) डेथ लाइन इस संदर्भ की मान्य पत्रकारिता संज्ञा नहीं है। इनका संबंध सामग्री स्वीकार करने के अंतिम समय से नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: डेड लाइन।

त्वरित सुझाव: समाचार के साथ अंतिम समय या समय-सीमा आए तो पत्रकारिता की संज्ञा डेड लाइन याद करें।

3(ii). एच टी एम एल क्या है ? [1 अंक]

(A) वेबसाइट

(B) वेबसीरीज़

(C) वेबफ़िल्म

(D) वेबभाषा

सही उत्तर: (D) वेबभाषा

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और उसके प्रसंग का संबंध समझना आवश्यक है।
- दिए गए विकल्पों में वही कथन स्वीकार्य है जो संबंधित पाठ या पारिभाषिक अर्थ से सटीक मेल खाए।

चरण 1: मुख्य अर्थ की पहचान एच टी एम एल वेब पृष्ठों की संरचना तैयार करने वाली मार्कअप भाषा है। इसके संकेतों से शीर्षक,

अनुच्छेद, संपर्क और चित्र जैसे तत्व व्यवस्थित किए जाते हैं। दिए गए विकल्पों में इसी कार्य को वेबभाषा कहा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच वेबसाइट ऐसे वेब पृष्ठों का संगठित समूह है; वह स्वयं भाषा नहीं है, इसलिए विकल्प (A) गलत है। विकल्प (B) वेबसीरीज़ और (C) वेबफ़िल्म इंटरनेट पर प्रस्तुत दृश्य-श्रव्य रचनाएँ हैं। वे सामग्री के प्रकार हैं, पृष्ठ बनाने की भाषा नहीं। प्रश्न किसी विशिष्ट साइट या कार्यक्रम का नाम नहीं, एच टी एम एल की श्रेणी पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है: वेबभाषा।

त्वरित सुझाव: वेब पृष्ठ की संरचना बनाने वाली भाषा और उस भाषा से बनी वेबसाइट में अंतर याद रखें।

3(iii). 'अख़बार की आवाज़' किसे माना जाता है ? [1 अंक]

(A) पहले पृष्ठ पर छपे मुख्य समाचार को

(B) संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को

(C) अर्थव्यवस्था से जुड़ी ख़बरों को

(D) अंतिम पृष्ठ पर छपे विदेशी समाचारों को

सही उत्तर: (B) संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय अख़बार का अपना विचार प्रस्तुत करता है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के विशेष संदर्भ और अन्य विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: संपादकीय की भूमिका समझें समाचारपत्र का संपादकीय किसी समसामयिक विषय पर उसका वैचारिक दृष्टिकोण, नीति और पक्ष व्यक्त करता है। इसलिए इसे अख़बार की आवाज़ कहा जाता है। पाठक इससे उस विषय के प्रति पत्र का रुख समझते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों को जाँचें पहले पृष्ठ का मुख्य समाचार किसी घटना की जानकारी देता है। अर्थव्यवस्था की ख़बरें एक विशेष क्षेत्र की सूचनाएँ हैं और विदेशी समाचार अन्य देशों की घटनाओं से संबंधित हैं। ये अपने आप में पूरे अख़बार का आधिकारिक विचार नहीं व्यक्त करते।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को अख़बार की आवाज़ माना जाता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अख़बार की अपनी राय पूछी जाए तो संपादकीय पहचानें; घटना की सूचना को पत्र की वैचारिक आवाज़ न समझें।

3(iv). पत्रकार द्वारा साक्षात्कार लिए जाने का उद्देश्य है : [1 अंक]

(A) समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना

(B) साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को प्रसिद्धि दिलाना

(C) पत्रकार द्वारा अपनी विशेष योग्यता दर्शाना

(D) पत्रकार द्वारा अपनी जिज्ञासा पूरी करना

सही उत्तर: (A) समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना

हल:

अवधारणा:

- साक्षात्कार पत्रकारीय सामग्री जुटाने का प्रमुख माध्यम है।

- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के विशेष संदर्भ और अन्य विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: साक्षात्कार का उद्देश्य पहचानें पत्रकार किसी विषय से जुड़े व्यक्ति से प्रश्न करके तथ्य, अनुभव, दृष्टिकोण और प्रतिक्रिया प्राप्त करता है। इस बातचीत से मिली प्रमाणिक सामग्री समाचार, फ़ीचर तथा विशेष रिपोर्ट तैयार करने में उपयोगी होती है।

चरण 2: अन्य उद्देश्यों का अंतर समझें किसी व्यक्ति को प्रसिद्ध करना पत्रकार का मूल उद्देश्य नहीं है। अपनी योग्यता प्रदर्शित करना भी साक्षात्कार का प्रयोजन नहीं है। पत्रकार की व्यक्तिगत जिज्ञासा प्रश्न पूछने की प्रेरणा हो सकती है, लेकिन पत्रकारीय साक्षात्कार का लक्ष्य पाठकों के लिए उपयोगी सामग्री जुटाना है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार, फ़ीचर और विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना उद्देश्य है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: साक्षात्कार के उद्देश्य में पाठक के लिए सूचना जुटाना देखें; प्रसिद्धि, आत्मप्रदर्शन और निजी जिज्ञासा अलग रखें।

3(v). टेलीविज़न के लिए समाचार या आलेख लेखन के लिए अनिवार्य है : [1 अंक]

(A) शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों

(B) समाचार की भाषा आंचलिक शब्दावली से युक्त हो

(C) समाचारों के बीच-बीच में दृश्य अवश्य उपस्थित हों

(D) बाइट, ग्राफिक के माध्यम से समाचारों की प्रस्तुति हो

सही उत्तर: (A) शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों

हल:

अवधारणा:

- टेलीविज़न दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों से समाचार पहुँचाता है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के विशेष संदर्भ और अन्य विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: दृश्य और शब्दों का संबंध समझें टेलीविज़न के लिए लिखते समय बोले जाने वाले शब्द परदे पर दिखाई दे रहे दृश्य के अनुकूल होने चाहिए। दृश्य कुछ और दिखाए तथा शब्द कुछ और बताएँ तो समाचार का आशय अस्पष्ट हो जाएगा। इसलिए दोनों का तालमेल लेखन की अनिवार्य शर्त है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा पहचानें आंचलिक शब्दावली हर समाचार के लिए आवश्यक नहीं है; भाषा सहज और बोधगम्य होनी चाहिए। बीच-बीच में दृश्य रखने भर से उनका कथ्य से मेल सुनिश्चित नहीं होता। बाइट और ग्राफिक उपयोगी प्रस्तुति साधन हैं, पर हर समाचार में दोनों का प्रयोग अनिवार्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: टीवी लेखन में पहले दृश्य देखें, फिर उसके अनुरूप शब्द चुनें; किसी प्रस्तुति साधन को हर समाचार की अनिवार्यता न मानें।

---

4. झूमने लगे फल,
रस अलौकिक
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना। [5 अंक]

4(i). कवि-कर्म की दृष्टि से 'झूमने लगे फल' का आशय है : [1 अंक]

(A) कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना
(B) साहित्य का आनंद आना
(C) खेतों में फ़सल लहलहाना
(D) हृदय का प्रसन्नता से झूमना

सही उत्तर: (A) कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेती के बिंब से साहित्य की सृजन प्रक्रिया समझाई गई है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के विशेष संदर्भ और अन्य विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: कवि-कर्म के संदर्भ में अर्थ खोलें यहाँ खेत, रोपाई और फल वास्तविक कृषि तक सीमित नहीं हैं। ये काव्य-सृजन के प्रतीक हैं। इस क्रम में फल झूमने का अर्थ है कि सृजन की प्रक्रिया पूरी होकर कृति अपना पूर्ण रूप ग्रहण कर चुकी है और उसका रस व्यक्त होने लगा है।

चरण 2: विकल्पों का भेद समझें साहित्य का आनंद आना पाठक की अनुभूति से संबंधित है। खेतों में फ़सल लहलहाना पंक्ति का केवल प्रत्यक्ष कृषि संबंधी अर्थ है। हृदय का प्रसन्नता से झूमना सामान्य भाव है। प्रश्न विशेष रूप से कवि-कर्म पूछता है, इसलिए कृति की पूर्णता सबसे सटीक अर्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि-कर्म की दृष्टि से कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना अभिप्रेत है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कवि-कर्म पूछे जाने पर खेती के हर चरण को रचना की प्रक्रिया से जोड़ें; फल को पूर्ण हुई कृति समझें।

4(ii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए पद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए : [1 अंक]

(A) कविता का आनंद शाश्वत है।
(B) कविता का आनंद क्षणिक है।
(C) कविता का आनंद सीमित है।
(D) कविता का आनंद अल्पकाल तक है।

सही उत्तर: (A) कविता का आनंद शाश्वत है।

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश कविता के आनंद की अक्षयता और स्थायित्व का बोध कराता है।

- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के विशेष संदर्भ और अन्य विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण देखें कवि ने कटाई को अनंतता से जोड़ा है और कहा है कि लुटते रहने पर भी रस कम नहीं होता। रस के अक्षय पात्र का बिंब भी बताता है कि कविता का आनंद बार-बार ग्रहण करने पर समाप्त नहीं होता। इससे आनंद का शाश्वत स्वरूप प्रकट होता है।

चरण 2: विपरीत कथन हटाएँ क्षणिक और अल्पकाल तक रहने वाला आनंद जल्दी समाप्त हो जाता है। सीमित आनंद भी किसी सीमा पर चुक सकता है। ये तीनों अर्थ पद्यांश के अनंतता, अक्षयता और कभी कम न होने के भाव से मेल नहीं खाते। अतः केवल शाश्वत आनंद वाला कथन संगत है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का आनंद शाश्वत है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अनंतता और अक्षय जैसे संकेत शब्द मिलने पर स्थायी आनंद चुनें; क्षणिक, सीमित और अल्पकालिक अर्थ हटाएँ।

4(iii). काव्यांश में 'अलौकिक' से तात्पर्य है : [1 अंक]

(A) लौकिक

(B) अद्भुत

(C) अल्पज्ञ

(D) आस्था

सही उत्तर: (B) अद्भुत

हल:

अवधारणा:

- किसी शब्द का अर्थ उसके काव्यगत संदर्भ से तय किया जाता है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के विशेष संदर्भ और अन्य विकल्पों के अर्थ का मिलान आवश्यक है।

चरण 1: अलौकिक रस का आशय समझें कवि जिस रस को अमृत धाराओं और अक्षय पात्र से जोड़ता है, वह साधारण अनुभव से ऊपर उठकर विशेष आनंद देने वाला है। यहाँ अलौकिक का अभिप्राय अद्भुत, असाधारण और विलक्षण है। दिए गए विकल्पों में अद्भुत इसी भाव का सटीक शब्द है।

चरण 2: अन्य शब्दों को अलग करें लौकिक का अर्थ सांसारिक या सामान्य जगत से संबंधित है, इसलिए वह अलौकिक का उपयुक्त पर्याय नहीं है। अल्पज्ञ कम जानने वाले को कहते हैं, जो ज्ञान की मात्रा बताता है। आस्था विश्वास का भाव है। ये दोनों भी काव्यांश में रस की असाधारणता का अर्थ नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में अलौकिक का तात्पर्य अद्भुत है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: शब्द का पर्याय चुनते समय उसे मूल पंक्ति में रखकर देखें; यहाँ अद्भुत रस अर्थ बनाए रखता है।

4(iv). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : काव्यानंद जितना ही बँटता है उतना ही बढ़ता जाता है।

कारण : साहित्य-सृजन प्राणिमात्र के मंगल के लिए है, काव्यानंद का वितरण लोक के आनंद का संवर्धन है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता तथा उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध अलग-अलग जाँचना चाहिए।
- काव्य का रस बाँटने से समाप्त नहीं होता; उससे समाज में आनंद का विस्तार होता है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें पद्यांश में रस के लुटते रहने पर भी उसके कम न होने की बात कही गई है। जितने अधिक पाठक कविता का आनंद ग्रहण करते हैं, उतने अधिक लोगों तक उसका रस पहुँचता है। इस अर्थ में काव्यानंद के वितरण से आनंद का विस्तार होता है और कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें साहित्य-सृजन का लोकमंगलकारी उद्देश्य समाज के लोगों तक संवेदना और आनंद पहुँचाना है। काव्यानंद का वितरण लोक के आनंद को बढ़ाता है। यह कारण भी पद्यांश के अक्षय रस और उसके वितरण के भाव के अनुकूल है।

चरण 3: कारण का कथन से संबंध समझें आनंद बाँटने पर अधिक लोगों को रस की अनुभूति मिलती है और सामूहिक आनंद बढ़ता है। इसी से स्पष्ट होता है कि वितरण काव्यानंद को घटाता नहीं, उसका विस्तार करता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या है। (A) और (B) किसी एक को गलत बताते हैं तथा (C) इस व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन और कारण को अलग जाँचें, फिर देखें कि लोक के आनंद का बढ़ना कथन में बताए विस्तार को कैसे समझाता है।

4(v). 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है ? [1 अंक]

(A) कवि हृदय को

(B) कविता पढ़ने से मिले आनंद को

(C) साहित्य को

(D) चौकोने छोटे खेत को

सही उत्तर: (D) चौकोने छोटे खेत को

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में चौकोना छोटा खेत कागज के पन्ने और काव्य-सृजन का रूपक है।
- रस का अक्षय पात्र वह है जिससे बार-बार आनंद मिलने पर भी उसका रस कम नहीं होता।

चरण 1: पद्यांश में पात्र का संबंध पहचानें कवि कहता है कि रस का अक्षय पात्र सदा का उसका छोटा चौकोना खेत है। इन पंक्तियों में पात्र सीधे चौकोने छोटे खेत को कहा गया है। यह साधारण खेती की भूमि नहीं, कागज के पन्ने पर रची गई कविता और उसके सृजन-क्षेत्र का रूपक है। इस खेत से आनंद की कटाई अनंत समय तक होती रहती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का भेद समझें कवि का हृदय सृजन की प्रेरणा का स्थान हो सकता है, लेकिन इन पंक्तियों में उसे पात्र नहीं कहा गया है। कविता पढ़ने से मिला आनंद रस की अनुभूति है, पात्र नहीं। साहित्य व्यापक रूप से रस का स्रोत है, किंतु दिए गए पद्यांश में पात्र का स्पष्ट संकेत चौकोने छोटे खेत की ओर है। इसलिए संदर्भ के सटीक नाम को चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष रस का अक्षय पात्र चौकोने छोटे खेत को कहा गया है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: रस का अक्षय पात्र के ठीक बाद आने वाली पंक्ति देखें; चौकोने छोटे खेत को वास्तविक खेत नहीं, काव्य-सृजन का रूपक समझें।

---

5. जाड़े का दिन। अमावस्या की रात – ठंडी और काली। मलेरिया और हैज़े से पीड़ित गाँव भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य ! अँधेरा और निस्तब्धता !
अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। [5 अंक]

5(i). गद्यांश में प्रयुक्त 'भयार्त्त' शब्द का अर्थ है : [1 अंक]

(A) भीषण

(B) भय से पीड़ित

(C) भयंकर

(D) भयानक

सही उत्तर: (B) भय से पीड़ित

हल:

अवधारणा:

- भयार्त्त शब्द का निर्माण भय और आर्त के मेल से हुआ है। आर्त का अर्थ पीड़ित या व्याकुल होता है। इसलिए इसका आशय भय से पीड़ित व्यक्ति या समुदाय से है।
- उत्तर के लिए पाठ में दिए गए शब्दों, प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: गाँव की दशा पहचानें गद्यांश में गाँव को भयार्त्त शिशु की तरह काँपता बताया गया है। मलेरिया और हैज़े से त्रस्त गाँव की तुलना डरे हुए बच्चे से की गई है। यहाँ गाँव भय पैदा नहीं कर रहा, बल्कि स्वयं भय सह रहा है।

चरण 2: शेष अर्थों का अंतर समझें भीषण, भयंकर और भयानक शब्द किसी डरावनी वस्तु या स्थिति का गुण बताते हैं। वे भय झेलने वाले की मन:स्थिति नहीं बताते। अत: (A), (C) और (D) इस प्रसंग में भयार्त्त का सही अर्थ नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भयार्त्त का अर्थ भय से पीड़ित है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: शब्दार्थ चुनते समय देखें कि पात्र भय उत्पन्न कर रहा है या स्वयं भय से पीड़ित है।

5(ii). गद्यांश का केन्द्रीय भाव है : [1 अंक]

(A) गाँव की प्रकृति का चित्रण

(B) गाँव की रात्रि का चित्रण

(C) भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण

(D) गाँव में व्याप्त नीरवता का चित्रण

सही उत्तर: (C) भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव वह व्यापक विचार है जिसके अंतर्गत गद्यांश के सभी प्रमुख बिंब आते हैं। केवल किसी एक दृश्य या वातावरण को पूरे अंश का उद्देश्य नहीं मानना चाहिए।
- उत्तर के लिए पाठ में दिए गए शब्दों, प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पीड़ा के संकेत जुटाएँ मलेरिया और हैज़ा, काँपता गाँव, उजड़ी झोपड़ियाँ तथा करुण सिसकियाँ गाँव की दयनीय दशा दिखाते हैं। अंधकार और निस्तब्धता इस पीड़ा को तीखा बनाते हैं। इसलिए अंश का केंद्र संकट में फँसा ग्रामीण जीवन है।

चरण 2: विकल्पों का विस्तार परखें (A) प्रकृति के चित्रण तक सीमित है और (B) केवल रात्रि का दृश्य बताता है। (D) नीरवता को ही मुख्य विषय मानता है। ये तीनों समग्र मानवीय त्रासदी को नहीं समेटते। दिए गए विकल्पों में (C) बीमारी और अभाव से पीड़ित गाँव की दशा को सबसे पूर्ण रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण केंद्रीय भाव है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव के प्रश्न में उस विकल्प को चुनें जो सभी प्रमुख विवरणों को एक साथ समेटता हो।

5(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए : [1 अंक]

(A) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती में आशा-किरण का आश्रय व्यर्थ प्रयास है।

(B) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती आशा-निराशा के भाव में झूल रही है।

(C) महामारी और आर्थिक तंगी से जूझती ग्राम-बस्ती में ग्रामीण एक दूसरे की सहायता कर रहे हैं।

(D) महामारी और आर्थिक तंगी से जूझती ग्राम-बस्ती अपनी स्थिति से संतुष्ट है।

सही उत्तर: (A) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती में आशा-किरण का आश्रय व्यर्थ प्रयास है।

हल:

अवधारणा:

- अंश में तारे का प्रकाश सहायता और आशा का प्रतीक है। प्रतीक का अर्थ उसके कार्य और उसके परिणाम से समझना चाहिए, केवल उसके उल्लेख से नहीं।
- उत्तर के लिए पाठ में दिए गए शब्दों, प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: प्रकाश के प्रयास का परिणाम देखें कथावाचक कहता है कि पृथ्वी पर प्रकाश का नाम नहीं है। कोई भावुक तारा पृथ्वी तक पहुँचना चाहता भी है तो उसकी शक्ति और ज्योति रास्ते में ही समाप्त हो जाती है। इससे सहायता और आशा पहुँचाने के प्रयास की निष्फलता उभरती है।

चरण 2: शेष कथनों को जाँचें (B) आशा और निराशा के बीच झूलने की बात कहता है, जबकि यहाँ आशा का प्रयास भी सफल नहीं होता। (C) में परस्पर सहायता का उल्लेख है, जिसका अंश में कोई प्रमाण नहीं है। (D) का संतोष भय, सिसकियों और आहों के ठीक विपरीत है। इसलिए दिए गए अंश की निराशापूर्ण स्थिति से (A) मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष ग्राम-बस्ती तक आशा-किरण पहुँचाने का प्रयास निष्फल दिखाई देता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: तारे के पृथ्वी पर आने की इच्छा के साथ उसका अंतिम परिणाम भी पढ़ें; निर्णय परिणाम से करें।

5(iv). प्रकृति को आँसू बहाते हुए क्यों दिखाया गया है ? [1 अंक]

(A) काव्यात्मक रूप में प्रकृति सौंदर्य व्यक्त करने हेतु

(B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु

(C) गाँव में व्याप्त सन्नाटे और अंधकार का वर्णन करने हेतु

(D) प्रकृति की विवशता और असमर्थता को प्रकट करने हेतु

सही उत्तर: (B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति को मनुष्य की तरह रोते या दुखी होते दिखाना मानवीकरण है। इसका उद्देश्य यहाँ ग्रामीणों की पीड़ा को वातावरण में भी प्रतिध्वनित करना है।
- उत्तर के लिए पाठ में दिए गए शब्दों, प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: आँसुओं का संदर्भ समझें अँधेरी रात के चुपचाप आँसू बहाने के साथ करुण सिसकियों और आहों का उल्लेख आता है। गाँव महामारी से पीड़ित है। इस प्रसंग में प्रकृति का रोना गाँव वालों के दुख के प्रति संवेदना को मूर्त रूप देता है।

चरण 2: अन्य प्रयोजनों से भेद करें (A) सौंदर्य-वर्णन का उद्देश्य बताता है, जबकि अंश दुखपूर्ण है। (C) सन्नाटे और अंधकार का बाहरी वर्णन है, पर आँसू उनके भावात्मक अर्थ को व्यक्त करते हैं। (D) सहायता न कर पाने की विवशता तारे वाले बिंब से अधिक संबंधित है; रात के आँसू मुख्यतः सहानुभूति दिखाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु आँसू बहाने का चित्र आया है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण का उद्देश्य पहचानने के लिए उस मानवीय क्रिया से व्यक्त भावना को प्रसंग से जोड़ें।

5(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	अमावस्या की रात – ठंडी और काली	(i)	आशा एवं जिजीविषा का अभाव
2.	प्रकाश का नाम नहीं	(ii)	पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना
3.	तारे की शक्ति और ज्योति रास्ते में ही शेष हो जाती	(iii)	निराशापूर्ण परिवेश

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

सही उत्तर: (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक और बिंब का मिलान उसके प्रसंगगत भाव से किया जाता है। रात, प्रकाश और असफल तारे के बिंब यहाँ संकटग्रस्त गाँव के अलग-अलग पक्ष खोलते हैं।
- उत्तर के लिए पाठ में दिए गए शब्दों, प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: तीनों बिंबों के अर्थ निर्धारित करें ठंडी और काली अमावस्या की रात निराशापूर्ण परिवेश दर्शाती है, इसलिए 1 का मिलान (iii) से होगा। प्रकाश का नाम न होना आशा और जिजीविषा के अभाव को व्यक्त करता है, इसलिए 2 का मिलान (i) से होगा।

चरण 2: शेष मिलान और विकल्प जाँचें तारे की ज्योति और शक्ति रास्ते में समाप्त होना पीड़ित लोगों तक सहायता न पहुँच पाने का संकेत है; इसलिए 3 का मिलान (ii) से होगा। (B) और (C) में पहला मिलान ही गलत है। (D) में पहला मिलान सही है, लेकिन दूसरे और तीसरे अर्थ आपस में बदल दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही मिलान 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले सबसे स्पष्ट बिंब का अर्थ मिलाएँ, फिर बचे हुए दोनों मिलानों की स्वतंत्र पुष्टि करें।

6(i). यशोधर बाबू अपने मातहतों से छुट्टी के समय मनोरंजक बात क्यों करते थे ? [1 अंक]

(A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

(B) अपने काम का भार अपने मातहतों पर डालने के लिए

(C) कर्मचारियों को देर तक दफ़्तर में रोकने के लिए

(D) कर्मचारियों और अपने बीच की दूरी समाप्त करने के लिए

सही उत्तर: (A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- मनोरंजक बातचीत का कारण पात्र के दफ्तरी व्यवहार और उसके समय-संदर्भ से स्पष्ट होता है। छुट्टी के समय का व्यवहार दिनभर की औपचारिकता की भरपाई करता है।
- उत्तर के लिए पाठ में दिए गए शब्दों, प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: यशोधर बाबू की दिनचर्या समझें यशोधर बाबू कार्यालय में कामकाज के दौरान अपने मातहतों से शुष्क और औपचारिक व्यवहार करते थे। छुट्टी के समय हल्की-फुल्की बातें करके वे इस शुष्कता का निराकरण करते थे, ताकि दिन का समापन कुछ सहज वातावरण में हो।

चरण 2: विकल्पों का उद्देश्य जाँचें (B) काम दूसरों पर डालने की मंशा बताता है और (C) देर तक रोकने की, जबकि प्रसंग में इन दोनों का आधार नहीं है। (D) से बातचीत का एक सामान्य प्रभाव समझा जा सकता है, लेकिन प्रश्न में पूछे गए विशिष्ट कारण को (A) अधिक ठीक ढंग से व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष वे दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए मनोरंजक बात करते थे। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पात्र की किसी आदत का कारण पूछे जाने पर सामान्य प्रभाव के स्थान पर पाठ में दिया विशिष्ट उद्देश्य चुनें।

6(ii). "हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है।" यह कथन किसके द्वारा किसे संबोधित कर कहा गया है ? [1 अंक]

(A) यशोधर बाबू द्वारा अपने बेटे भूषण को

(B) यशोधर बाबू द्वारा अपनी बड़ी बेटी को

(C) यशोधर बाबू द्वारा अपनी पत्नी को

(D) यशोधर बाबू द्वारा चड्ढा को

सही उत्तर: (A) यशोधर बाबू द्वारा अपने बेटे भूषण को

हल:

अवधारणा:

- संवाद की पहचान के लिए वक्ता और संबोधित व्यक्ति के साथ संवाद का घरेलू प्रसंग देखना आवश्यक है।
- यशोधर बाबू का कथन परिवार की नई उत्सव-परंपराओं के प्रति उनकी असहजता और पीढ़ियों के अंतर को व्यक्त करता है।

चरण 1: घर लौटने का प्रसंग पहचानें यशोधर बाबू के घर पहुँचने पर उनका बड़ा बेटा भूषण देर से लौटने का उलाहना देता है। परिवार ने विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाने की तैयारी की है। इसी बातचीत में यशोधर बाबू पूछते हैं कि हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है।

चरण 2: संबोधित व्यक्ति का निर्धारण करें इस कथन का संबोधन बेटे भूषण से है। चड्ढा के साथ कार्यालय में वर्षगाँठ की अलग बातचीत हुई थी; उस प्रसंग को यहाँ दिए संवाद से नहीं मिलाना चाहिए। बड़ी बेटी और पत्नी इस कथन की संबोधित पात्र नहीं हैं। इसलिए (B), (C) और (D) गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यह कथन यशोधर बाबू ने अपने बेटे भूषण को संबोधित करके कहा था। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: संवाद याद करते समय केवल कथन नहीं, उसका स्थान और सामने उपस्थित पात्र भी साथ याद रखें।

6(iii). 'जूझ' कहानी के लेखक को कविता लिखने की प्रेरणा किससे मिली ? [1 अंक]

(A) अपने पिता से

(B) अपनी माँ से

(C) न.वा. सौंदलगेकर से

(D) अपने मित्र से

सही उत्तर: (C) न.वा. सौंदलगेकर से

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की रचना जूझ में शिक्षक का सृजनशील व्यक्तित्व लेखक की साहित्यिक रुचि को दिशा देता है। प्रेरणा का संबंध कविता के अनुभव और उसके रचनात्मक अभ्यास से है।
- उत्तर के लिए पाठ में दिए गए शब्दों, प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: शिक्षक का प्रभाव स्पष्ट करें न.वा. सौंदलगेकर कविता को भाव, लय और तन्मयता के साथ पढ़ाते थे। उनके सस्वर पाठ और कविता के प्रति प्रेम ने लेखक को आकर्षित किया। लेखक को अनुभव हुआ कि परिचित जीवन और आसपास की वस्तुएँ भी कविता का विषय बन सकती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों से भेद करें पिता का संबंध लेखक के खेती के काम और पढ़ाई के संघर्ष से है; वे कविता की प्रेरणा के स्रोत नहीं हैं। माँ पढ़ने की इच्छा में सहायक थीं, लेकिन यहाँ पूछा गया काव्य-प्रेरणा का प्रसंग उनका नहीं है। मित्र भी इस विशिष्ट प्रेरणा का स्रोत नहीं है। अतः (A), (B) और (D) उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को कविता लिखने की प्रेरणा न.वा. सौंदलगेकर से मिली। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: किसी प्रेरणा-स्रोत के प्रश्न में उस व्यक्ति का वही कार्य याद करें जिसने लेखक की विशेष रुचि जगाई।

6(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I : वसंत पाटील पढ़ने में बहुत कमजोर था।

कथन II : वसंत पाटील आनंदा का शत्रु था।

कथन III : वसंत पाटील कक्षा का मॉनीटर था।

कथन IV : वसंत पाटील कक्षा बारहवीं का छात्र था।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन I तथा II सही हैं।

(B) कथन I, II तथा III सही हैं।

(C) कथन III सही है।

(D) कथन IV सही है।

सही उत्तर: (C) कथन III सही है।

हल:

अवधारणा:

- पात्र की पहचान उसके अध्ययन, व्यवहार और कक्षा में निभाई गई भूमिका के आधार पर की जाती है।
- वसंत पाटील का चरित्र के लिए पाठ में दिए गए प्रसंग को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: वसंत का वास्तविक परिचय वसंत पाटील पढ़ाई में होशियार और अनुशासित विद्यार्थी था। वह कक्षा का मॉनीटर था। आनंदा उसकी लगन और पढ़ने के तरीके से प्रभावित होता है। इसलिए कथन III पाठ के अनुरूप है।

चरण 2: शेष कथनों का परीक्षण वसंत को पढ़ने में कमजोर कहना उसके वास्तविक चरित्र के विपरीत है, अतः कथन I गलत है। वह आनंदा का शत्रु नहीं, सहयोगी था, इसलिए कथन II भी गलत है। प्रसंग में उसे बारहवीं का विद्यार्थी नहीं बताया गया है, इसलिए कथन IV भी स्वीकार्य नहीं है। इस प्रकार I और II वाले विकल्प (A), I, II और III वाला विकल्प (B), तथा IV वाला विकल्प (D) गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन III सही है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कथनों वाले प्रश्न में हर कथन को अलग जाँचें; एक गलत कथन पूरे संयुक्त विकल्प को गलत बना देता है।

6(ix). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में प्रयुक्त 'असीक का फूल' से क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

(A) स्वागत के फूल

(B) आशीर्वाद के फूल

(C) माला बनाने के फूल

(D) पूजा के फूल

सही उत्तर: (B) आशीर्वाद के फूल

हल:

अवधारणा:

- आंचलिक अभिव्यक्ति का अर्थ उसके सांस्कृतिक प्रसंग और प्रयोग से निर्धारित होता है।
- आंचलिक शब्द का अर्थ के लिए पाठ में दिए गए प्रसंग को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: अभिव्यक्ति का अर्थ समझना "असीक" शब्द आशीर्वाद के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। "असीक का फूल" बड़ों की शुभकामना

और आशीष का प्रतीक है। कहानी के पारिवारिक प्रसंग में इसका संबंध स्नेहपूर्वक दिए जाने वाले आशीर्वाद से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच स्वागत के फूल आने वाले अतिथि के सम्मान के लिए दिए जाते हैं, इसलिए विकल्प (A) अभिव्यक्ति का सही अर्थ नहीं है। माला बनाने के फूल उनका भौतिक उपयोग बताते हैं, इसलिए (C) गलत है। पूजा के फूल धार्मिक अनुष्ठान से जुड़े हैं, इसलिए (D) भी यहाँ उपयुक्त नहीं है। प्रश्न फूल के सामान्य उपयोग के बजाय आंचलिक पद का अर्थ पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष "असीक का फूल" का तात्पर्य आशीर्वाद के फूल से है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: आंचलिक शब्दों में फूल जैसी परिचित वस्तु पर न अटकें; पहले उस विशेष शब्द का संदर्भगत अर्थ पहचानें।

6(v). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : सिंधु सभ्यता को जल-संस्कृति कहा जाता है।

कारण : सिंधु घाटी सभ्यता पहली ज्ञात संस्कृति है जिसमें लगभग सात सौ कुएँ, नदी, स्नानागार और बेजोड़ जल निकासी की व्यवस्था है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण के प्रश्न में दोनों की सत्यता तथा उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध अलग-अलग जाँचे जाते हैं।
- सिंधु सभ्यता की जल-संस्कृति के लिए पाठ में दिए गए प्रसंग को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: कथन की जाँच सिंधु सभ्यता में जल का विशेष महत्व था। नगरों में पानी उपलब्ध कराने, स्नान करने और गंदे पानी को बाहर निकालने के सुनियोजित प्रबंध थे। इसलिए उसे जल-संस्कृति कहना सही है।

चरण 2: कारण की जाँच पाठ में लगभग सात सौ कुओं, नदी, स्नानागार और बेजोड़ जल-निकासी का उल्लेख है। ये विवरण जल के उपयोग और प्रबंधन की उन्नत व्यवस्था दिखाते हैं। अतः दिया गया कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध पानी से जुड़ी इतनी व्यापक व्यवस्था ही इस सभ्यता को जल-संस्कृति कहने का आधार बनती है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। कथन या कारण को गलत बताने वाले (A) और (B), तथा व्याख्या का संबंध नकारने वाला (C) अनुपयुक्त हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्य सत्य होने पर भी जाँचें कि कारण वास्तव में कथन का आधार स्पष्ट करता है या केवल अलग जानकारी देता है।

6(vi). सिंधु घाटी सभ्यता का स्वरूप था : [1 अंक]

(A) जंगली

(B) नगरीय

(C) ग्रामीण

(D) कबीलाई

सही उत्तर: (B) नगरीय

हल:

अवधारणा:

- किसी सभ्यता का स्वरूप उसकी बस्तियों, स्थापत्य और सार्वजनिक व्यवस्थाओं से पहचाना जाता है।
- सिंधु सभ्यता का स्वरूप के लिए पाठ में दिए गए प्रसंग को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: नगरीय लक्षण पहचानना सिंधु सभ्यता के नगरों में योजनाबद्ध सड़कें, पक्के मकान, कुएँ, स्नानागार और जल-निकासी की व्यवस्था थी। ये संगठित नगर-जीवन के प्रमाण हैं। मोहनजोदड़ो का वर्णन इसी उन्नत नगरीय संस्कृति को सामने लाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखना जंगली स्वरूप वाला विकल्प (A) विकसित नगर-नियोजन से मेल नहीं खाता। ग्रामीण स्वरूप वाला (C) भी नगरों की विस्तृत सार्वजनिक सुविधाओं को व्यक्त नहीं करता। कबीलाई स्वरूप वाला (D) इस संगठित शहरी सभ्यता की उचित पहचान नहीं है। प्रश्न उसके प्रमुख स्वरूप के बारे में है, इसलिए नगरीय विकल्प ही संगत है।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता का स्वरूप नगरीय था। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सड़क, पक्के मकान और निकासी जैसे सार्वजनिक प्रबंध साथ दिखाई दें तो सभ्यता के नगरीय स्वरूप को पहचानें।

6(vii). वर्तमान में सिंध की खास पहचान क्या बन गया ? [1 अंक]

(A) दाढ़ी वाले 'नरेश' की मूर्ति

(B) गुलकारी वाला दुपट्टा

(C) छापे वाला कपड़ा 'अजरक'

(D) बारीक बुनाई वाला सूती कपड़ा

सही उत्तर: (C) छापे वाला कपड़ा 'अजरक'

हल:

अवधारणा:

- पाठ में प्राचीन कला और वर्तमान लोकजीवन की निरंतरता सांस्कृतिक पहचान का संकेत देती है।
- सिंध की सांस्कृतिक पहचान के लिए पाठ में दिए गए प्रसंग को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: पाठ का संकेत पहचानना छापे वाला कपड़ा "अजरक" वर्तमान सिंध की खास पहचान बन गया है। पाठ में वस्त्रों की सजावट और कला-बोध का उल्लेख प्राचीन संस्कृति तथा आज के सिंध के संबंध को स्पष्ट करता है। यहाँ प्रश्न वर्तमान की विशिष्ट पहचान पूछता है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर दाढ़ी वाले "नरेश" की मूर्ति, विकल्प (A), प्राचीन पुरावशेष है। गुलकारी वाला दुपट्टा, विकल्प (B), वस्त्र-सज्जा का उदाहरण है, पर पूछी गई विशिष्ट पहचान नहीं है। बारीक सूती कपड़ा, विकल्प (D), बुनाई की विशेषता बताता है। पाठ में वर्तमान सिंध की खास पहचान के रूप में "अजरक" का उल्लेख है, इसलिए (C) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष छापे वाला कपड़ा "अजरक" सिंध की खास पहचान बन गया है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में "वर्तमान" जैसे समय-सूचक शब्द पर ध्यान दें; प्राचीन पुरावशेष और आज की पहचान में अंतर करें।

6(viii). पत्थर की शिला पर लिखी कविता 'जूझ' कहानी के लेखक के द्वारा कब मिटाई जाती थी ? [1 अंक]

(A) मास्टर को दिखा देने के बाद

(B) याद हो जाने के बाद

(C) मित्रों को दिखा देने के बाद

(D) मास्टर को सुना देने के बाद

सही उत्तर: (B) याद हो जाने के बाद

हल:

अवधारणा:

- आत्मकथात्मक प्रसंग में घटना का क्रम और लेखक की रचना-प्रक्रिया उत्तर का आधार होते हैं।
- आनंदा की कविता-रचना प्रक्रिया के लिए पाठ में दिए गए प्रसंग को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: कविता रचने की प्रक्रिया आनंदा कविता बनाते समय पत्थर की शिला पर उसे लिख लेता था। कविता याद हो जाने के बाद वह उसे मिटा देता था। इस प्रकार शिला अस्थायी लेखन-साधन थी और स्मरण हो जाना उसे मिटाने का निर्णायक अवसर था।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच मास्टर को दिखाना, विकल्प (A), मिटाने की शर्त नहीं था। मित्रों को दिखाने वाला विकल्प (C) भी इस प्रसंग का आधार नहीं है। मास्टर को सुनाने के बाद मिटाने वाला विकल्प (D) भी घटना के क्रम से मेल नहीं खाता। लेखक की रचना और स्मरण की प्रक्रिया से स्पष्ट होता है कि कविता याद होने पर ही मिटाई जाती थी।

चरण 3: निष्कर्ष पत्थर की शिला पर लिखी कविता याद हो जाने के बाद मिटाई जाती थी। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: घटना-क्रम के प्रश्न में यह पहचानें कि कार्य किस शर्त के पूरा होने पर हुआ, केवल उसमें आए पात्रों पर न जाएँ।

6(x). 'जब तक बाप है तब तक मौज कर ले।' यशोधर बाबू यह बात अपने बच्चों से कहते हैं : [1 अंक]

(A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

(B) उनका उत्साहवर्धन करने के लिए

(C) जिम्मेदारियों से मुक्त रखने के लिए

(D) उनके प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने के लिए

सही उत्तर: (A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- किसी संवाद का आशय पात्र के स्वभाव, लहजे और पारिवारिक संबंधों के संदर्भ में समझा जाता है।
- यशोधर बाबू का व्यंग्य के लिए पाठ में दिए गए प्रसंग को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: संवाद का संदर्भ और स्वर यशोधर बाबू पुराने संस्कारों और जिम्मेदारी-बोध से जुड़े हैं। बच्चों से "जब तक बाप है तब तक मौज कर ले" कहना उनकी मौज और निश्चिंतता पर व्यंग्य है। वाक्य में यह संकेत है कि पिता की जिम्मेदारियों के सहारे बच्चे बेफिक्र रह सकते हैं।

चरण 2: अन्य आशयों का परीक्षण यह बच्चों का उत्साहवर्धन करने का कथन नहीं है, इसलिए विकल्प (B) गलत है। वे उन्हें सचमुच जिम्मेदारियों से मुक्त रखने की नीति नहीं बता रहे, इसलिए (C) भी उचित नहीं है। पिता का स्नेह व्यापक संबंध में हो सकता है, पर इस विशेष संवाद का मुख्य प्रयोजन प्रेम प्रकट करना नहीं है; अतः (D) के बजाय व्यंग्य वाला अर्थ चुना जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू यह बात बच्चों पर व्यंग्य करने के लिए कहते हैं। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: संवाद का उद्देश्य चुनते समय शाब्दिक अर्थ के साथ पात्र के लहजे को देखें; व्यंग्य में बाहरी छूट के पीछे टिप्पणी छिपी होती है।

7(क). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

'राजभाषा पखवाड़ा' में एक दिन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े अनुभव को कल्पना, संवेदना और सजीव वर्णन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। घटनाओं का क्रम और भाषा की सहजता पाठक को अनुभव से जोड़ते हैं।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, आकर्षक आरंभ, विषय का संक्षिप्त विस्तार और प्रभावपूर्ण अंत रखें। प्रथम पुरुष का प्रयोग निजी अनुभव को आत्मीय बना सकता है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना विद्यालय के आयोजन में प्रवेश से आरंभ करें, फिर प्रतियोगिता और अपनी भागीदारी दिखाएँ। अंत में हिंदी को दैनिक व्यवहार में अपनाने का संकल्प जोड़ें। लेख को निबंध की लंबी भूमिका से बचाते हुए एक विशिष्ट अनुभव के आसपास केंद्रित रखें। शीर्षक के नीचे अनुच्छेद में घटनाओं और भावों का संबंध स्पष्ट हो।

चरण 2: अभिव्यक्ति को सजीव बनाएँ पोस्टरों के रंग, प्रार्थना की ध्वनि, मंच पर झिझक और पुस्तक प्रदर्शनी जैसे विवरण अनुभव को सजीव बनाते हैं। उत्सव के साथ हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग का विचार भी उभरना चाहिए। सरल और प्रवाहपूर्ण वाक्यों में कथन करें। अनावश्यक तथ्यों या उपदेशों का विस्तार न करें; दृश्य और अनुभूति के बीच संतुलन रखने से रचना का प्रभाव बढ़ता है।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख **राजभाषा पखवाड़ा में एक दिन**

आज हमारे विद्यालय में राजभाषा पखवाड़े का विशेष आयोजन था। प्रार्थना सभा में हिंदी की आत्मीय ध्वनि गूँजी तो पूरा परिसर उत्सवमय लगने लगा। दीवारों पर विद्यार्थियों के बनाए रंगीन पोस्टर सजे थे। कहीं सुलेख प्रतियोगिता चल रही थी, तो कहीं कविता पाठ की तैयारी थी। मैंने तत्काल भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। मंच पर जाते समय पैर काँपे, लेकिन अपनी भाषा में बोलते हुए झिझक धीरे-धीरे दूर हो गई। पुस्तक प्रदर्शनी में कहानियों की सुगंध और मित्रों की उत्सुक बातें मन को भा रही थीं। अंत में प्रधानाचार्य ने कार्यालयी कामकाज में सरल हिंदी अपनाने का आग्रह किया। लौटते समय मैंने निश्चय किया कि हिंदी का सम्मान केवल पखवाड़े तक सीमित नहीं रखूँगा; उसे अपने दैनिक व्यवहार में भी स्थान दूँगा।

चरण 4: निष्कर्ष यह रचना विषयानुकूल शीर्षक, क्रमबद्ध अनुभव, सजीव विवरण और भावपूर्ण समापन के साथ लगभग 120 शब्दों में प्रस्तुत की गई है।

त्वरित सुझाव: लेख लिखने से पहले तीन संकेत चुनें: आरंभ का दृश्य, सबसे यादगार अनुभव और अंत में मन में बचा भाव। इन्हीं को क्रम में जोड़कर शब्द सीमा सँभालें।

7(ख). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

मेरी प्रथम रेल यात्रा [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े अनुभव को कल्पना, संवेदना और सजीव वर्णन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। घटनाओं का क्रम और भाषा की सहजता पाठक को अनुभव से जोड़ते हैं।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, आकर्षक आरंभ, विषय का संक्षिप्त विस्तार और प्रभावपूर्ण अंत रखें। प्रथम पुरुष का प्रयोग निजी अनुभव को आत्मीय बना सकता है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना घर से स्टेशन पहुँचने, रेल में बैठने, रास्ते के दृश्य और गंतव्य तक पहुँचने का स्वाभाविक क्रम रखें। पहली यात्रा की उत्सुकता तथा अंत में बची स्मृति को केंद्र बनाएँ। लेख को निबंध की लंबी भूमिका से बचाते हुए एक विशिष्ट अनुभव के आसपास केंद्रित रखें। शीर्षक के नीचे अनुच्छेद में घटनाओं और भावों का संबंध स्पष्ट हो।

चरण 2: अभिव्यक्ति को सजीव बनाएँ ध्वनि, गति और दृश्य से वातावरण रचें। खिड़की से पीछे छूटते खेत, पुल की गड़गड़ाहट और सहयात्री से परिचय जैसे अनुभव प्रथम यात्रा की नवीनता व्यक्त करते हैं। सरल और प्रवाहपूर्ण वाक्यों में कथन करें। अनावश्यक तथ्यों या उपदेशों का विस्तार न करें; दृश्य और अनुभूति के बीच संतुलन रखने से रचना का प्रभाव बढ़ता है।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख **मेरी प्रथम रेल यात्रा**

मेरी पहली रेल यात्रा गर्मियों की छुट्टियों में दादी के घर जाते समय हुई। स्टेशन पर पहुँचते ही चायवालों की पुकार और गाड़ियों की सीटी सुनकर मैं रोमांचित हो उठा। रेल आई तो पिताजी ने सामान सँभाला और मैं खिड़की वाली सीट पर जा बैठा। धीरे-धीरे प्लेटफार्म पीछे छूटने लगा। बाहर खेत, पेड़ और छोटे मकान मानो उलटी दिशा में दौड़ रहे थे। पुल पर पहियों की गड़गड़ाहट सुनकर क्षणभर डर लगा, फिर नीचे बहती नदी देखकर मन खिल गया। सहयात्री बच्चे से दोस्ती हुई और हमने मिलकर घर का बना भोजन खाया। गंतव्य आया तो उतरने की इच्छा ही नहीं हुई। उस यात्रा ने मुझे नए दृश्यों के साथ अनजान लोगों की आत्मीयता से भी परिचित कराया। उसकी मीठी याद आज भी मेरे मन में बसी है।

चरण 4: निष्कर्ष यह रचना विषयानुकूल शीर्षक, क्रमबद्ध अनुभव, सजीव विवरण और भावपूर्ण समापन के साथ लगभग 120 शब्दों में प्रस्तुत की गई है।

त्वरित सुझाव: लेख लिखने से पहले तीन संकेत चुनें: आरंभ का दृश्य, सबसे यादगार अनुभव और अंत में मन में बचा भाव। इन्हीं को क्रम में जोड़कर शब्द सीमा सँभालें।

7(ग). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

मेरा देश मेरा अभिमान [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के प्रति व्यक्तिगत अनुभूति, कल्पना और विचारों का स्वाभाविक मेल होना चाहिए।
- देशप्रेम को प्रकृति, संस्कृति और नागरिक उत्तरदायित्व से जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सुसंगठित लेख लिखा जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना लेख के आरंभ में भारत से आत्मीय संबंध व्यक्त करें। मध्य भाग में प्राकृतिक विविधता, भाषाओं और साझा संस्कृति का वर्णन दें। स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान से वर्तमान नागरिक के दायित्व तक विचार बढ़ाएँ। अंत में देश के विकास में योगदान का संकल्प रखें। केवल नारों की सूची बनाने के स्थान पर अनुभूतिपरक भाषा अपनाएँ। विचारों का क्रम निजी जुड़ाव से राष्ट्रीय गौरव और फिर अपने कर्तव्य तक रखें। प्रकृति के चित्र लेख को जीवंत बनाते हैं, जबकि सफाई, समानता और ईमानदारी जैसे उदाहरण देशप्रेम को व्यवहार से जोड़ते हैं। शीर्षक विषय के अनुरूप स्पष्ट हो और अनुच्छेद में वाक्यों का परस्पर संबंध बना रहे।

चरण 2: पूर्ण नमूना लेख **मेरा देश मेरा अभिमान**

भारत मेरे लिए मानचित्र पर खिंची सीमाओं का नाम भर नहीं, मेरी पहचान और आत्मा का आधार है। हिमालय की ऊँचाई, नदियों की निर्मल धारा और खेतों की हरियाली मुझे अपनी मिट्टी से जोड़ती है। यहाँ अनेक भाषाएँ, वेशभूषाएँ और परंपराएँ हैं, फिर भी अपनत्व का एक सूत्र सबको बाँधे रखता है। स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग ने हमें स्वतंत्र आकाश दिया है। वैज्ञानिकों, किसानों, सैनिकों और खिलाड़ियों का परिश्रम हमारा गौरव बढ़ाता है। किंतु देश पर अभिमान करना केवल उसकी प्रशंसा करना नहीं है। स्वच्छता रखना, ईमानदारी से काम करना, भेदभाव मिटाना और संविधान का सम्मान करना भी देशप्रेम है। मैं अपने छोटे प्रयासों से भारत को अधिक सुंदर, शिक्षित और न्यायपूर्ण बनाने का संकल्प लेता हूँ। मेरा देश, मेरा अभिमान है।

चरण 3: निष्कर्ष लेख में देश के प्रति आत्मीयता, विविधता में एकता और जिम्मेदार नागरिकता का भाव एक साथ व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक आकर्षक शुरुआत, दो ठोस उदाहरण और अंत में अपना संकल्प अवश्य रखें।

8(i)(a). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर 'इंदर सेना' पर पानी फेंकने के संदर्भ में लेखक (धर्मवीर भारती) और जीजी के बीच हुए वार्तालाप (संवाद) को दृश्य के रूप में प्रस्तुत कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथा को दृश्य में बदलते समय घटनास्थल, संक्षिप्त मंचसंकेत और पात्रों के संवाद दिए जाते हैं।
- इस प्रसंग में लेखक पानी की बरबादी पर आपत्ति करता है, जबकि जीजी दान और लोकविश्वास के आधार पर अपना पक्ष रखती हैं।

चरण 1: प्रसंग और संवाद की योजना आँगन में इंदर सेना पर पानी फेंके जाने का प्रसंग रखें। लेखक का तर्क पानी की कमी और उसकी बरबादी है। जीजी का उत्तर पाने से पहले देने तथा इंद्र को जल का अर्घ्य चढ़ाने की लोकमान्यता पर केंद्रित रहे। नीचे दिए संवाद प्रसंग का रूपांतरण हैं; इन्हें पाठ के हूबहू उद्धरण न मानें।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में दृश्य (आँगन में इंदर सेना पर पानी फेंकते देखकर लेखक जीजी से कहता है।)

लेखक : पानी की इतनी कमी है, फिर इसे व्यर्थ क्यों बहाती हो?

जीजी : यह इंद्र को अर्घ्य है। कुछ पाने के लिए पहले देना पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष दृश्य में लेखक का तर्कशील विरोध और जीजी का दान तथा लोकविश्वास पर आधारित दृष्टिकोण संवादों से स्पष्ट होता है।

त्वरित सुझाव: पहले छोटा मंचसंकेत दें, फिर दोनों पात्रों की अलग विचारधारा उनके अपने संवादों से सामने लाएँ।

अथवा

8(i)(b). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

रेडियो नाटकों का लेखन अन्य माध्यमों के लेखन से कुछ कठिन होता है, क्यों ? कारण सहित उत्तर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता मंच, चेहरे, वेशभूषा और दृश्य क्रिया को देख नहीं सकता।
- संवाद, स्वर, संगीत और ध्वनि प्रभाव मिलकर दृश्य, वातावरण और घटनाओं का बोध कराते हैं।

चरण 1: कठिनाई का कारण समझें मंच या चलचित्र में स्थान और क्रिया सीधे दिखाई दे सकते हैं, किंतु रेडियो में उनका संकेत सुनाई देना चाहिए। इसलिए लेखक को ऐसे स्वाभाविक संवाद तथा सार्थक ध्वनि प्रभाव चुनने होते हैं जिनसे श्रोता बिना दृश्य सहायता के पात्रों और घटनाक्रम को समझ सके। अनावश्यक विवरण संवादों को बोझिल बना सकता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो में दृश्य दिखाई नहीं देते। लेखक को संवादों, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, संगीत और ध्वनि प्रभावों से स्थान, वातावरण, पात्र तथा घटनाएँ स्पष्ट करनी पड़ती हैं। संवादों की स्वाभाविकता बनाए रखते हुए श्रोता की कल्पना जगाना कठिन है; इसलिए इसका लेखन अधिक चुनौतीपूर्ण है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक की कठिनाई दृश्य सहायता के अभाव में केवल श्रव्य साधनों से संपूर्ण नाटकीय अनुभव रचने में है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दृश्य के अभाव का कारण लिखें, फिर संवाद और ध्वनि प्रभावों की भूमिका से उसे स्पष्ट करें।

8(ii)(a). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

अप्रत्याशित लेखन की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय वह है जिस पर लेखक ने पहले से सामग्री या तैयार उत्तर नहीं सोचा होता।
- ऐसे लेखन में मौलिक दृष्टि, स्वतंत्र चिंतन और निजी अनुभवों का रचनात्मक उपयोग महत्त्वपूर्ण है।

चरण 1: पहली विशेषता समझिए अप्रत्याशित लेखन किसी रटे हुए ढाँचे पर निर्भर नहीं होता। लेखक सामने आए विषय को अपने ढंग से देखता है और उसके ऐसे पक्ष खोजता है जिन्हें सामान्यतः अनदेखा कर दिया जाता है। इसलिए मौलिकता इसका प्रमुख गुण है।

चरण 2: दूसरी विशेषता समझिए इस लेखन में कल्पनाशीलता के साथ अपने अनुभवों और आसपास के जीवन का उपयोग किया जाता है। विचारों की स्वतंत्रता का अर्थ विषय से भटकना नहीं है; अनुभव और कल्पना को विषय से जोड़कर सुसंगत ढंग से व्यक्त करना चाहिए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर अप्रत्याशित लेखन की दो विशेषताएँ हैं—मौलिकता और रचनात्मक स्वतंत्रता। इसमें लेखक विषय को नई दृष्टि से देखकर अपने स्वतंत्र विचार प्रस्तुत करता है। साथ ही, वह निजी अनुभवों तथा कल्पना के सहारे विषय को रोचक और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति देता है।

चरण 4: निष्कर्ष अप्रत्याशित लेखन की प्रमुख विशेषताएँ मौलिक दृष्टि और अनुभव तथा कल्पना पर आधारित स्वतंत्र रचनात्मक अभिव्यक्ति हैं।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ स्पष्ट रूप से बताइए और प्रत्येक के साथ उसका छोटा अर्थ लिखिए; केवल विशेषणों की सूची न दीजिए।

अथवा

8(ii)(b). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

'फ़ीचर' लेखन में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग होना चाहिए ? उसकी दो विशेषताएँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर तथ्याधारित होते हुए भी पाठक की रुचि और संवेदना से जुड़ा रचनात्मक लेखन है।
- इसकी भाषा सरल, सहज और संप्रेषणीय होने के साथ रोचक तथा चित्रात्मक होनी चाहिए।

चरण 1: भाषा की सहजता समझिए फ़ीचर सामान्य पाठकों के लिए लिखा जाता है। इसलिए कठिन पारिभाषिक शब्दों, बोझिल वाक्यों और अनावश्यक पांडित्य से बचना चाहिए। सरल तथा सहज भाषा से विषय की जानकारी आसानी से समझ आती है और पाठक का लेख से संबंध बनता है।

चरण 2: भाषा की रोचकता समझिए फ़ीचर की भाषा में दृश्य, प्रसंग और मानवीय अनुभव जीवंत होने चाहिए। चित्रात्मक अभिव्यक्ति पाठक के सामने घटना या स्थिति का चित्र उपस्थित करती है। रचनात्मक शैली का प्रयोग तथ्यों को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए हो; उससे तथ्य बदलने नहीं चाहिए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर फ़ीचर की भाषा सरल, सहज और आम पाठक की समझ में आने वाली होनी चाहिए। उसकी दो विशेषताएँ हैं—रोचकता और चित्रात्मकता। रोचक भाषा पाठक की उत्सुकता बनाए रखती है, जबकि चित्रात्मक भाषा विषय या घटना को आँखों के सामने सजीव कर देती है।

चरण 4: निष्कर्ष फ़ीचर में सहज और संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग हो; रोचकता तथा चित्रात्मकता उसकी दो प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा का सामान्य स्वरूप बताने के बाद दो गुणों के नाम और उनका प्रभाव लिखिए, ताकि प्रश्न के दोनों निर्देश पूरे हों।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

भारत में पहला छापाखाना कब, कहाँ और किस उद्देश्य से खोला गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न भारत में मुद्रण की शुरुआत के समय, स्थान और उद्देश्य की जानकारी जाँचता है।
- भारत का पहला छापाखाना 1556 में गोवा पहुँचा; इसका संबंध पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों से था।

चरण 1: समय और स्थान निश्चित कीजिए भारत में पहला छापाखाना 1556 ईस्वी में गोवा में स्थापित हुआ। इस उत्तर में वर्ष और स्थान दोनों आवश्यक तथ्य हैं। मुद्रण के यूरोपीय इतिहास या भारत में बाद में शुरू हुए समाचारपत्रों की तिथियाँ यहाँ नहीं लिखनी चाहिए, क्योंकि प्रश्न पहले छापाखाने के बारे में है।

चरण 2: स्थापना का उद्देश्य समझाइए पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने इस छापाखाने का उपयोग धार्मिक साहित्य छापने के लिए किया। ईसाई धर्म की शिक्षाओं और प्रचार से संबंधित सामग्री मुद्रित करके उसका प्रसार करना इसका मुख्य उद्देश्य था। इसे आरंभ से ही समाचारपत्र निकालने की व्यावसायिक व्यवस्था मानना सही नहीं होगा।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भारत में पहला छापाखाना 1556 ईस्वी में गोवा में खोला गया। इसे पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने स्थापित किया था। इसका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करना था। इसके माध्यम से धार्मिक पुस्तकें तथा धर्म की शिक्षाओं से संबंधित सामग्री छापी जाती थी, ताकि मुद्रित साहित्य के द्वारा लोगों तक धार्मिक संदेश पहुँचाया जा सके।

चरण 4: निष्कर्ष भारत का पहला छापाखाना 1556 ईस्वी में गोवा में ईसाई धर्म के प्रचार के उद्देश्य से स्थापित किया गया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन बातें इसी क्रम से रखें—1556 ईस्वी, गोवा और ईसाई धर्म का प्रचार; इससे कोई अपेक्षित तथ्य नहीं छूटेगा।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं और अंशकालिक पत्रकार किन्हें कहते हैं तथा इन्हें अन्य किस नाम से जाना जाता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कार्य और नियुक्ति के स्वरूप के आधार पर पत्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र होते हैं।
- अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन के लिए सीमित दायरे में काम करते हैं और स्ट्रिंगर कहलाते हैं।

चरण 1: पत्रकारों के प्रकार गिनाइए पत्रकार मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं—पूर्णकालिक पत्रकार, अंशकालिक पत्रकार और स्वतंत्र पत्रकार। पूर्णकालिक पत्रकार नियमित कर्मचारी के रूप में किसी समाचार-संगठन से जुड़े होते हैं। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संगठन के स्थायी कर्मचारी हुए बिना विभिन्न संस्थाओं के लिए लिख सकते हैं। प्रकार बताते समय अंशकालिक और स्वतंत्र पत्रकार को एक ही न मानें।

चरण 2: अंशकालिक पत्रकार की पहचान स्पष्ट कीजिए अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन के लिए नियमित वेतनभोगी कर्मचारी की तरह पूरे समय काम नहीं करते। वे अपने क्षेत्र की खबरें उस संगठन तक पहुँचाते हैं और प्राय: प्रकाशित समाचारों के अनुसार पारिश्रमिक पाते हैं। इन्हें स्ट्रिंगर भी कहा जाता है। प्रश्न में विशेष रूप से इनकी परिभाषा और दूसरा नाम पूछा गया है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पत्रकार मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं—पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र पत्रकार। अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन के नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होते। वे सीमित समय में अपने क्षेत्र की खबरें उस संगठन को भेजते हैं और सामान्यत: प्रकाशित समाचारों के आधार पर पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं। ऐसे पत्रकारों को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं; अंशकालिक पत्रकार नियमित वेतनभोगी कर्मचारी न होकर समाचार भेजते हैं और स्ट्रिंगर कहलाते हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रकार गिनाने के बाद अंशकालिक पत्रकार की परिभाषा और स्ट्रिंगर नाम अलग से लिखें; स्वतंत्र पत्रकार से इसका अंतर बनाए रखें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
विशेष लेखन क्या है और यह क्यों किया जाता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन में किसी खास क्षेत्र की घटनाओं, समस्याओं और प्रवृत्तियों पर केंद्रित सामग्री तैयार की जाती है।
- सामान्य समाचार से आगे बढ़कर विषय की पृष्ठभूमि, तकनीकी शब्दावली और प्रभाव समझाना इसका उद्देश्य है।

चरण 1: अर्थ और स्वरूप समझिए खेल, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, व्यापार, कृषि, स्वास्थ्य और सिनेमा जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित लेखन विशेष लेखन है। इसमें केवल घटना की सूचना देना पर्याप्त नहीं होता। लेखक को उस क्षेत्र की शब्दावली, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और वर्तमान गतिविधियों का पर्याप्त ज्ञान चाहिए। विषय का विशेषज्ञ अथवा उसमें रुचि और जानकारी रखने वाला पत्रकार तथ्य जुटाकर उन्हें पाठक के लिए सरल बनाता है। विशेष लेखन के लिए तथ्य-जाँच और विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग आवश्यक है। केवल कठिन शब्द लिखना विशेषज्ञता नहीं है; सही जानकारी को सामान्य पाठक की समझ के अनुरूप प्रस्तुत करना इसकी विशेषता है। इसमें सूचनाओं के साथ उनकी व्याख्या भी दी जाती है।

चरण 2: उद्देश्य और नमूना उत्तर विशेष लेखन किसी विशिष्ट क्षेत्र, जैसे विज्ञान, खेल, अर्थव्यवस्था या स्वास्थ्य, पर विशेषज्ञ जानकारी के आधार पर किया गया लेखन है। इसमें संबंधित विषय की तकनीकी बातों, पृष्ठभूमि और प्रभावों को सरल भाषा में समझाया जाता है। यह पाठकों की विशेष रुचियों और जिज्ञासाओं को संतुष्ट करने, जटिल विषयों का विश्लेषण करने तथा उन्हें प्रामाणिक और उपयोगी जानकारी देने के लिए किया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन विषय की गहराई और पाठक की विशिष्ट जानकारी की आवश्यकता को जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले परिभाषा दीजिए, फिर दो क्षेत्र और पाठक को होने वाला लाभ बताइए।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
भादों के बीत जाने पर प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने 'पतंग' कविता में दिखाया है उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में ऋतु-परिवर्तन बच्चों के खेल और उल्लास की पृष्ठभूमि है।
- भादों की वर्षा के बाद चमकीली सुबह, साफ आकाश और हल्की धूप शरद के संकेत हैं।

चरण 1: प्रकृति के संकेत पहचानिए भादों के जाते ही वर्षा की घनी नमी और अँधेरे का स्थान उजाले और खुले आकाश को मिलता है। कविता में खरगोश की आँखों जैसे लाल सवेरे का बिंब सुबह की कोमल लालिमा सामने लाता है। शरद का आना साइकिल चलाकर तेजी से आने की छवि में व्यक्त हुआ है। इससे ऋतु में आई ताजगी, गति और उत्साह उभरते हैं। कविता में ऋतु के आगमन का मानवीकरण हुआ है। साइकिल की घंटी और गति जैसे परिचित अनुभव शरद को जीवंत बनाते हैं। प्रकृति के ये बिंब स्थिर सजावट नहीं हैं; वे बच्चों की चंचलता से मेल खाते हैं। उत्तर में वर्षा के सामान्य वर्णन के स्थान पर कविता के इन्हीं संकेतों को महत्व देना चाहिए। आसमान की खुली कोमलता पतंग के खेल के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भादों के बीतने पर वर्षा का अँधेरा छँट जाता है और प्रकृति उजली तथा सुंदर हो उठती है। सवेरे खरगोश की आँखों जैसे लाल दिखाई देते हैं। शरद ऋतु आती है; वातावरण में चमक, हल्की धूप और ताजगी फैलती है। आकाश मुलायम लगता है। इन परिवर्तनों से बच्चों में उमंग भरती है और वे पतंग उड़ाने के लिए उत्साहित हो उठते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने शरद के उजले, ताजगी भरे प्राकृतिक रूप को बच्चों के उल्लास से जोड़ा है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति-चित्रण में लाल सवेरा, उजाला, हल्की धूप और मुलायम आकाश के बिंब चुनिए।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'बादल राग' कविता से उद्धृत निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

'तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया'

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की इन पंक्तियों में प्रकृति के दृश्य के साथ मानव जीवन का भाव जुड़ा है।
- बादल की छाया अस्थिर सुख पर मँडराते दुख का बिंब बनती है।

चरण 1: बिंब का अर्थ खोलिए समीर का अर्थ हवा है और समीर-सागर हवा के अपार विस्तार का बिंब है। इस विस्तार में बादल की छाया तैरती दिखाई देती है। कवि दृश्य को केवल प्राकृतिक वर्णन तक सीमित नहीं रखता; वह सुख और दुख के मानवीय अनुभव से जोड़ता है। सुख की अस्थिरता बताती है कि जीवन की प्रसन्न अवस्था स्थायी नहीं होती और उसके साथ दुख आने की आशंका भी रहती है। यहाँ सुख पर दुख की छाया का अर्थ यह नहीं है कि सुख का अस्तित्व ही नहीं होता। भाव यह है कि वह स्थायी और पूरी तरह निश्चिंत करने वाला नहीं है। कवि की दृष्टि जीवन के बदलते अनुभवों पर है। बादल का तैरना और छाया का पड़ना इसी भाव को मूर्त करते हैं। आशय में दृश्य और जीवन-संबंधी अर्थ दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आशय वायु के अपार विस्तार पर बादल की छाया तैर रही है। कवि इस दृश्य से जीवन के सुख-दुख की स्थिति स्पष्ट करता है। सांसारिक सुख स्थायी नहीं हैं; उन पर दुख की छाया मँडराती रहती है। जैसे हवा में बादल गतिशील हैं, वैसे ही जीवन की परिस्थितियाँ बदलती हैं। इसलिए सुख के बीच भी दुख की आशंका बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्तियाँ प्रकृति के माध्यम से जीवन के सुख की क्षणभंगुरता और दुख की उपस्थिति बताती हैं।

त्वरित सुझाव: पहले समीर-सागर का दृश्य समझाइए, फिर अस्थिर सुख पर दुख की छाया का भाव खोलिए।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

तुलसी ने 'कवितावली' के छंदों में तत्कालीन आर्थिक विषमताओं का स्वाभाविक चित्रण किया है। सिद्ध कीजिए कि तुलसी युग चितेरे कवि थे।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास समाज की वास्तविक आर्थिक दशा को जीविका और भूख के उदाहरणों से चित्रित करते हैं।
- किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक की दुर्दशा तत्कालीन व्यवस्था के व्यापक संकट को व्यक्त करती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण जोड़िए तुलसीदास किसान की खेती, भिखारी की भीख, व्यापारी के व्यापार और सेवक की नौकरी छिन जाने का उल्लेख करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि संकट किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है। पेट की आग मनुष्य को उचित-अनुचित कर्मों की ओर धकेलती है; पुत्र-पुत्री तक बेचने की विवशता गरीबी की चरम स्थिति दिखाती है। ये ठोस सामाजिक स्थितियाँ उन्हें अपने समय का संवेदनशील चित्रकार सिद्ध करती हैं। युग-चितेरा वह रचनाकार है जिसकी रचना में उसके समय की स्थितियाँ पहचान में आती हैं। यहाँ भूख कोई अमूर्त भावना नहीं, बल्कि आजीविका के साधनों से वंचित समाज की वास्तविक पीड़ा है। कवि जनजीवन की असहायता के प्रति करुणा और संवेदनशीलता प्रकट करता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने अपने युग की गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्रण किया है। किसान के पास खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार तथा सेवक को नौकरी नहीं मिलती। पेट की आग से व्याकुल लोग उचित-अनुचित काम करते और संतान तक बेचते हैं। जनसाधारण की इस विवशता और जीविका-संकट का मार्मिक चित्रण तुलसी को युग-चितेरा कवि सिद्ध करता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीविका के साधनों का अभाव और भूख की विवशता चित्रित कर तुलसी ने अपने युग का सामाजिक सत्य प्रस्तुत

किया है।

त्वरित सुझाव: युग-चितेरा सिद्ध करते समय किसान, व्यापारी और सेवक के जीविका-संकट के उदाहरण अवश्य दीजिए।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'हो जाए न पथ में रात कहीं' – इस काव्य पंक्ति में कवि ने किस पथ की ओर संकेत किया है ? कवि ने 'रात' शब्द का प्रयोग करके कौन-सी आशंका व्यक्त की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में पथिक की यात्रा जीवन में लक्ष्य तक पहुँचने के प्रयत्न का प्रतीक भी बनती है। घर लौटने की उत्कंठा इस गति को तीव्र करती है।
- रात का शाब्दिक अर्थ अँधेरा है; व्यापक आशय जीवन का समय समाप्त होने तथा लक्ष्य तक पहुँचने में बाधा पड़ने की आशंका है।

चरण 1: पथ का संकेत समझिए कविता का पथ घर लौटते पथिक का मार्ग है। भाव के स्तर पर वह जीवन का यात्रा-पथ भी है, जिस पर मनुष्य अपने प्रियजनों और अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचने के लिए बढ़ता है। इसलिए पंक्ति में गति तथा समय का विशेष महत्त्व है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि ने पथ द्वारा जीवन के यात्रा-पथ और अपने अभीष्ट तक पहुँचने के मार्ग का संकेत किया है। रात से आशय अँधेरा और जीवन का अवसान है। कवि को आशंका है कि लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही उपलब्ध समय समाप्त न हो जाए।

चरण 3: निष्कर्ष पथ लक्ष्य की ओर जाने वाला जीवन-मार्ग है और रात उसके पूरा होने से पहले समय बीतने की आशंका व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: पथ और रात का पहले सामान्य अर्थ, फिर जीवन से जुड़ा प्रतीकात्मक अर्थ लिखिए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'बात सीधी थी पर' कविता में भाषा के विषय में व्यंग्य करके कवि क्या सिद्ध करना चाहता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता सहज कथ्य को कृत्रिम भाषिक चमत्कार से उलझाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।
- भाषा का उद्देश्य अर्थ को स्पष्ट और प्रभावी बनाना है। अभिव्यक्ति की सफलता सहजता और कथ्य के अनुरूप भाषा में है।

चरण 1: व्यंग्य का लक्ष्य पहचानिए कवि दिखाता है कि सीधी बात को भाषा की पेचीदगियों में फँसाने से उसका आशय नष्ट हो जाता है। प्रभाव जमाने के लिए किया गया अनावश्यक शब्द-सज्जा का आग्रह विचार को पाठक तक पहुँचाने में बाधक बनता है। कवि का आग्रह भाषा और भाव के स्वाभाविक संबंध पर है, जिससे पाठक अर्थ आसानी से ग्रहण कर सके।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि भाषा के अनावश्यक आडंबर और शब्दों की तोड़-मरोड़ पर व्यंग्य करता है। वह सिद्ध करना चाहता है कि भाषा कथ्य को सहज, स्पष्ट और प्रभावी बनाए। कठिन शब्दों और कृत्रिम चमत्कार के मोह में सीधी बात का मूल अर्थ खोना अनुचित है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सहज, अर्थपूर्ण भाषा का समर्थन और भाषा के बनावटी चमत्कार का विरोध करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में भाषा की कठिनता मात्र नहीं, कथ्य को उलझाने वाले अनावश्यक आडंबर को लक्ष्य बनाइए।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है' पंक्ति में कौन ज़िदयाया है ? कवि ने 'ठुनक' शब्द द्वारा बाल-मनोविज्ञान के किस पक्ष का वर्णन किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में माँ और बच्चे के घरेलू प्रसंगों से वात्सल्य तथा बालस्वभाव प्रकट होते हैं।
- ठुनकना बच्चे की रूठने, मचलने और अपनी इच्छा पूरी कराने की सहज चेष्टा है; इसे वयस्कों की योजनाबद्ध जिद के समान नहीं समझना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और पात्र पहचानिए आँगन में छोटा बच्चा चाँद पाने की जिद करता है। माँ उसकी इच्छा को सीधे तर्क से काटने के स्थान पर दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर बहलाती है। इस प्रसंग में बच्चे की भोली कल्पना तथा माँ का वात्सल्य उभरता है। असंभव वस्तु पाने की उसकी चाह में अनुभवहीनता भी झलकती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आँगन में छोटा बच्चा चाँद लेने के लिए जिदयाया है। ठुनक शब्द उसकी रूठने, मचलने और अपनी इच्छा तत्काल पूरी कराने की प्रवृत्ति दिखाता है। इसमें बालसुलभ हठ, अधीरता तथा भोलेपन का स्वाभाविक और सजीव चित्रण हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष जिद करने वाला बच्चा है; ठुनक उसके भोले हठ और इच्छा पूरी कराने की बालसुलभ बेचैनी को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: ठुनक का अर्थ बताते समय बच्चे की चाँद पाने की इच्छा से उसे अवश्य जोड़िए।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'काले मेघा पानी दे' पाठ की इंदर सेना द्वारा किए जाने वाले कार्य समाज के लिए कितने प्रेरक हैं और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती का पाठ वर्षा की प्रतीक्षा, इंदर सेना के लोकानुष्ठान और जीजी की आस्था के माध्यम से लोकजीवन की संवेदना प्रस्तुत करता है।
- प्रेरक पक्षों का मूल्यांकन सामूहिक प्रयास, त्याग तथा दूसरों के कल्याण की भावना के आधार पर करना चाहिए। वर्षा के अनुष्ठान को वैज्ञानिक कारण नहीं मानना चाहिए।

चरण 1: इंदर सेना की गतिविधियों का आधार सूखे और भीषण गर्मी के समय लड़कों की टोली इंद्र से पानी माँगते हुए घर-घर जाती है। लोग उन पर पानी डालते हैं। कमी के समय भी पानी देना अपने प्रिय संसाधन का अंश समाज के हित में छोड़ने का प्रतीक बनता है। जीजी इसी त्याग को दान की सार्थकता से जोड़ती हैं।

चरण 2: प्रेरणा की सीमा और महत्त्व इन कार्यों में वर्षा की कामना सबके लिए है। टोली का उत्साह संकट में निष्क्रिय रहने के बजाय एकजुट होने का संदेश देता है। हालाँकि अनुष्ठान से वर्षा होने का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिलता, उसमें निहित लोकहित, सहयोग और त्याग की भावना सामाजिक दृष्टि से प्रेरक है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इंदर सेना के कार्य सामूहिकता, परोपकार और त्याग की दृष्टि से प्रेरक हैं। सूखे के समय बच्चे घर-घर जाकर सबके लिए वर्षा की प्रार्थना करते हैं। जल की कमी में भी लोग अपने हिस्से का पानी देते हैं। इससे संकट में मिलकर प्रयास करने, संसाधन बाँटने तथा लोककल्याण के लिए त्याग करने की प्रेरणा मिलती है। अनुष्ठान की वैज्ञानिक पुष्टि नहीं होती।

चरण 4: निष्कर्ष इंदर सेना का सामाजिक संदेश संकट में सहयोग, साझा हित और त्याग है; उसकी प्रेरणा इन मानवीय मूल्यों में निहित है।

त्वरित सुझाव: प्रेरक होने का कारण लिखते समय टोली की सामूहिकता और पानी देने में निहित त्याग के उदाहरण दीजिए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : शिरीष और महात्मा गाँधी की तुलना पाठ में किस आधार पर की गई है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलना का आधार बाहरी रूप नहीं, प्रतिकूल परिस्थितियों में अडिग रहकर जीवन में सरसता और आशा बनाए रखना है।
- शिरीष की मस्ती और गाँधीजी की अनासक्ति में लोककल्याण की समान प्रेरणा दिखाई गई है।

चरण 1: शिरीष के स्वभाव को समझें शिरीष भीषण गरमी, लू और उमस में भी फूलता है। वातावरण की कठोरता उसे अपनी सहज मस्ती, कोमलता और सरसता से विचलित नहीं करती। लेखक के लिए उसका खिलना प्रतिकूलता के बीच जीवन के प्रति विश्वास का प्रतीक है। इस तुलना में पेड़ के फूलों की सुंदरता से अधिक उसकी सहनशीलता और जीवनीशक्ति महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 2: गाँधीजी से समानता जोड़ें सांप्रदायिक हिंसा और वैमनस्य के कठिन वातावरण में गाँधीजी भी प्रेम, अहिंसा और मानवता की प्रेरणा देते रहे। बाहरी अशांति के बावजूद वे अपने आदर्शों पर स्थिर रहे। दोनों की विशेषता परिस्थितियों से हार मान लेना नहीं, उनसे अप्रभावित रहकर दूसरों के जीवन में सुख और शांति का संचार करना है। इसी आधार पर लेखक ने शिरीष को अवधूत कहा और गाँधीजी को याद किया।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर शिरीष और महात्मा गाँधी की तुलना उनकी अटूट सहनशीलता, अनासक्ति तथा विपरीत परिस्थितियों में भी सरसता बनाए रखने के आधार पर की गई है। शिरीष भीषण गरमी और लू में खिलता रहता है। उसी प्रकार गाँधीजी सांप्रदायिक हिंसा और घृणा के बीच प्रेम, अहिंसा तथा मानवता का संदेश देते रहे। दोनों कठिनाइयों से विचलित हुए बिना लोककल्याण की प्रेरणा देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों प्रतिकूल वातावरण में भी अपनी सहजता, आस्था और लोकमंगल की भावना बनाए रखते हैं।

त्वरित सुझाव: शिरीष की गरमी सहने की क्षमता को गाँधीजी के हिंसा के बीच प्रेम और अहिंसा के आचरण से जोड़िए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर कारण सहित लिखिए कि जाति-प्रथा के पोषक मनुष्य को किस प्रकार की स्वतंत्रता देने के पक्षधर हैं और किस प्रकार स्वतंत्रता देने के विरोध में हैं। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वतंत्रता का संबंध केवल आने-जाने या संपत्ति रखने से नहीं, अपनी जीविका चुनने के अधिकार से भी है।
- जाति-प्रथा जन्म के आधार पर पेशा तय करती है और व्यक्ति की रुचि, योग्यता तथा चुनाव को बाधित करती है।

चरण 1: स्वीकृत स्वतंत्रताओं को पहचानें डॉ. आंबेडकर बताते हैं कि जाति-प्रथा के समर्थक जीवन की सुरक्षा, आने-जाने की स्वतंत्रता और संपत्ति रखने के अधिकार को स्वीकार करते हैं। उन्हें इन अधिकारों पर आपत्ति नहीं होती। उत्तर में इस पक्ष को स्पष्ट करना आवश्यक है, क्योंकि प्रश्न यह नहीं पूछता कि वे हर प्रकार की स्वतंत्रता का विरोध करते हैं। वह उनके विचारों के भीतर मौजूद विरोधाभास उजागर करता है।

चरण 2: विरोध का कारण स्पष्ट करें जब स्वतंत्रता में अपनी योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनना और अपनी क्षमताओं का उपयोग करना शामिल होता है, तब ये समर्थक उसका विरोध करते हैं। वे व्यक्ति का पेशा उसकी जाति और वंश के अनुसार निश्चित रखना चाहते हैं। इससे जातिगत श्रेणीकरण और परंपरागत वर्चस्व सुरक्षित रहते हैं। लेखक के अनुसार किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध निर्धारित काम करना पड़े, तो यह दासता का ही रूप है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर जाति-प्रथा के पोषक मनुष्य को जीवन-सुरक्षा, आने-जाने और संपत्ति रखने की स्वतंत्रता देने के पक्षधर हैं। किंतु वे उसकी योग्यता और रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता का विरोध करते हैं, क्योंकि वे जन्म के आधार पर पैतृक पेशा निर्धारित रखना चाहते हैं। इससे जातिगत व्यवस्था बनी रहती है। लेखक ऐसी बाध्यता को दासता मानते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष जाति-समर्थक सामान्य नागरिक स्वतंत्रताएँ स्वीकार करते हैं, पर जन्माधारित पेशागत बंधन हटाने के विरोधी हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में स्वीकृत अधिकारों के बाद व्यवसाय चुनने के अधिकार का विरोध और उसका जातिगत कारण अवश्य लिखिए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'खोटे सिक्कों की टकसाल' किसे और क्यों कहा गया है ? 'भक्तिन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह व्यंग्यात्मक संबोधन पितृसत्तात्मक समाज की पुत्र-प्राथमिकता और कन्या-जन्म के प्रति भेदभाव प्रकट करता है।
- टकसाल सिक्के बनाने का स्थान है; यहाँ इसका रूपक बेटियों को जन्म देने वाली भक्तिन के लिए प्रयुक्त है।

चरण 1: संबोधन और प्रसंग बताएँ लछमिन अर्थात भक्तिन ने लगातार तीन बेटियों को जन्म दिया था। उसकी सास और जेठानियाँ पुत्रों की माताएँ होने के कारण अपने को उससे श्रेष्ठ मानती थीं। इसी पारिवारिक प्रसंग में भक्तिन के लिए यह उपेक्षापूर्ण संबोधन आया है। यह भक्तिन की क्षमता या चरित्र पर लेखिका का निष्पक्ष निर्णय नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भक्तिन को 'खोटे सिक्कों की टकसाल' कहा गया है, क्योंकि उसने लगातार तीन बेटियों को जन्म दिया था। पुत्रों को महत्त्व देने वाला उसका परिवार बेटियों को खोटे सिक्कों के समान मूल्यहीन मानता था। यह संबोधन समाज की भेदभावपूर्ण मानसिकता दर्शाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह संबोधन भक्तिन के लिए है और कन्या-जन्म को हीन समझने की सामाजिक मानसिकता पर व्यंग्य है।

त्वरित सुझाव: तीन बेटियों के जन्म का तथ्य लिखकर स्पष्ट कीजिए कि खोटापन बेटियों में नहीं, समाज की सोच में है।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'बाज़ार दर्शन' पाठ में छल-कपट से परिपूर्ण बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र के लिए प्रयुक्त दो विशेषणों का औचित्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक जरूरतों की पूर्ति करने वाले बाजार और छल-कपट द्वारा लालच बढ़ाने वाले बाजार में अंतर करते हैं।
- मायावी और अनीतिपूर्ण विशेषण बाजार को पोषित करने वाली अर्थव्यवस्था के भ्रम तथा शोषण को उजागर करते हैं।

चरण 1: दो विशेषणों का औचित्य समझें लेखक ऐसे अर्थशास्त्र को 'मायावी शास्त्र' और 'अनीति-शास्त्र' कहते हैं। मायावी होने का कारण यह है कि बाजार का आकर्षण अनावश्यक वस्तुओं को भी आवश्यक प्रतीत कराता है। अनीति-शास्त्र इसलिए कि छल-कपट, शोषण और अधिक लाभ की लालसा मानवता तथा नैतिकता को पीछे कर देती है। यहाँ आलोचना आवश्यकताओं के ईमानदार आदान-प्रदान की नहीं, मनुष्य को लालच में फँसाने वाली व्यवस्था की है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक ने ऐसे अर्थशास्त्र को 'मायावी शास्त्र' और 'अनीति-शास्त्र' कहा है। वह आकर्षण और भ्रम से अनावश्यक खरीदारी कराता है, इसलिए मायावी है। छल-कपट तथा शोषण को बढ़ावा देकर मानवीय संबंधों और नैतिकता को नष्ट करता है, इसलिए अनीति-शास्त्र है।

चरण 3: निष्कर्ष मायावी विशेषण भ्रमपूर्ण आकर्षण को तथा अनीति-शास्त्र विशेषण छल और शोषण के समर्थन को रेखांकित करता है।

त्वरित सुझाव: हर विशेषण के साथ अलग कारण जोड़िए: मायावी के साथ भ्रम और अनीति-शास्त्र के साथ छल तथा शोषण।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : पहलवान की ढोलक निरीह, साधनहीन और विवश गाँव वालों के प्रति क्या भूमिका निभाती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेणु की कहानी में ढोलक की ध्वनि महामारी और मृत्यु से घिरे ग्रामीण जीवन के विपरीत जीवन-शक्ति का प्रतीक है।
- उत्तर में ढोलक से मिलने वाले मानसिक सहारे और संघर्ष की प्रेरणा को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: गाँव वालों की स्थिति पहचानें महामारी से पीड़ित गाँव के लोग निरीह और साधनहीन हैं। रात का सन्नाटा तथा मृत्यु की आशंका उनका भय बढ़ाते हैं। उपचार और साधनों के अभाव में उन्हें ऐसे सहारे की आवश्यकता है जो मन को टूटने से बचाए।

चरण 2: ढोलक की भूमिका समझें लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज इस भयावह वातावरण में निरंतर सुनाई देती है। वह रोग का उपचार नहीं करती, किंतु भय को चुनौती देती है और निराश लोगों को जीवन के लिए संघर्ष करने का साहस देती है।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी और मृत्यु के भय से घिरे साधनहीन गाँव वालों के लिए पहलवान की ढोलक आशा और साहस का सहारा थी। उसकी गूँज रात की भयावह निस्तब्धता तोड़कर भय घटाती तथा निराश लोगों में जीवन से जूझने की शक्ति जगाती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक की भूमिका लिखते समय बीमारी के उपचार की जगह भय घटाने और जीने का साहस देने पर ध्यान दें।

14(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : कार्यालय में अपने सहकर्मियों के साथ सेक्शन ऑफ़िसर वाई.डी. पंत के व्यवहार पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू का व्यक्तित्व अनुशासनप्रियता और आत्मीय विनोद के मेल से उभरता है।
- कार्यालय में पदगत गंभीरता के साथ सहकर्मियों से उनके अनौपचारिक संबंधों का उल्लेख करें।

चरण 1: व्यवहार की दोनों विशेषताएँ पहचानें सेक्शन ऑफ़िसर वाई.डी. पंत काम के विषय में अनुशासन और मर्यादा चाहते हैं। फिर भी सहकर्मियों से उनका संबंध केवल आदेश देने वाले अधिकारी का नहीं है। वे अवसर मिलने पर हँसी-मजाक करते हैं और वातावरण को सहज बनाते हैं।

चरण 2: प्रसंग से व्यक्तित्व स्पष्ट करें सहकर्मियों के साथ उनकी बातचीत में हल्का व्यंग्य और अपनापन दिखाई देता है। वे पुरानी पीढ़ी के संस्कारों को महत्त्व देते हैं; नई पीढ़ी की बातों पर अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करते हैं। इस प्रकार गंभीर अधिकारी और विनोदप्रिय व्यक्ति के दोनों रूप साथ मिलते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सेक्शन ऑफ़िसर वाई.डी. पंत कार्यालय में अनुशासनप्रिय और मर्यादित अधिकारी थे। फिर भी सहकर्मियों के साथ उनका व्यवहार आत्मीय तथा विनोदपूर्ण था। वे हल्की चुहल और हँसी-मजाक करते थे, जिससे पद की गंभीरता बनाए रखते हुए भी कार्यालय का वातावरण सहज बना रहता था।

त्वरित सुझाव: चरित्र-टिप्पणी में काम के प्रति अनुशासन और सहकर्मियों के प्रति आत्मीय विनोद, दोनों विशेषताएँ जोड़ें।

14(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'जूझ' कहानी का कथानायक विषम परिस्थितियों में भी किस प्रकार अपने सपने साकार करने में सफल हो सका ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना में शिक्षा की आकांक्षा संघर्ष की प्रेरक शक्ति है।
- कथानायक की अपनी मेहनत के साथ माँ, दत्ता जी राव और शिक्षक के सहयोग की भूमिका समझें।

चरण 1: बाधा और प्रयास पहचानें कथानायक के पिता उसे पढ़ाने के बजाय खेत के काम में लगाए रखना चाहते थे। वह इस परिस्थिति से हार नहीं मानता। माँ के साथ दत्ता जी राव की सहायता लेकर वह दोबारा स्कूल जाने का अवसर प्राप्त करता है।

चरण 2: अवसर को उपलब्धि में बदलें स्कूल जाने के बाद भी वह खेती और घर के काम करता रहा। परिश्रम, समय के सदुपयोग और पढ़ने की लगन से उसने अपनी पढ़ाई आगे बढ़ाई। सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा ने उसकी काव्य-रुचि विकसित की; वह अनुभवों को कविता में ढालने लगा।

चरण 3: निष्कर्ष कथानायक ने गरीबी, खेती के काम और पिता के विरोध के सामने हार नहीं मानी। माँ और दत्ता जी राव की सहायता से वह स्कूल लौटा। निरंतर परिश्रम, पढ़ाई की लगन तथा सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा से उसने शिक्षा और काव्य-सृजन का सपना साकार किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल मेहनत न लिखें; स्कूल लौटने में मिले सहयोग और कविता के लिए शिक्षक की प्रेरणा भी जोड़ें।

14(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

मुअनजो-दड़ो कहाँ है ? उसकी प्रसिद्धि का कारण लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का यात्रा-वृत्तांत मुअनजो-दड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता के शहरी जीवन का परिचय देता है।
- स्थान और प्रसिद्धि, प्रश्न के दोनों पक्ष हैं; नगर-योजना के ठोस उदाहरण उत्तर को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: भौगोलिक स्थान बताएं मुअनजो-दड़ो वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है। यह सिंधु घाटी सभ्यता का प्रमुख पुरातात्त्विक नगर है। इसलिए इसके स्थान का उल्लेख करते समय वर्तमान देश और प्रांत दोनों बताना उपयुक्त है।

चरण 2: प्रसिद्धि के आधार स्पष्ट करें इसके अवशेष विकसित शहरी व्यवस्था का प्रमाण हैं। सुव्यवस्थित सड़कें, पकी ईंटों के मकान, ढकी हुई नालियाँ और विशाल स्नानागार यहाँ के जीवन की उन्नत व्यवस्था बताते हैं। इन निर्माणों से नगर-नियोजन और स्वच्छता के प्रति सजगता का परिचय मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है। यह सिंधु घाटी सभ्यता के सुव्यवस्थित नगर के रूप में प्रसिद्ध है। पकी ईंटों के मकान, योजनाबद्ध सड़कें, विकसित जल-निकासी व्यवस्था और विशाल स्नानागार इसकी उन्नत नगर-योजना तथा सभ्यता के प्रमुख प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: स्थान के लिए पाकिस्तान का सिंध प्रांत लिखें और प्रसिद्धि समझाने के लिए नालियों तथा विशाल स्नानागार के उदाहरण दें।